# वैदिक गर्जना

वर्ष १७ अंक ३ १० मार्च २०१७

आर्य समाज के १४२ वें स्थापना दिवसपर
संस्थापक व वेदोद्धारक महर्षि दयानंद को शतश: नमन।

डी.ए.वी.संस्था द्वारा वैदिक विद्वान् डॉ.चन्द्रकान्तजी गर्जे व पं.सुधाकरजी शास्त्री का सम्मान करते हुए संस्थान के प्रधान श्री पूनमजी सुरी ।

परली में आयोजित राज्यस्तरीय संस्कृत संशोधन कार्यशाला में मार्गदर्शन करते हुए विदुषी डॉ.क्रान्ति व्यवहारे, मंच पर हैं डॉ.कहालेकर, प्रो.सत्यकामजी पाठक, श्री दत्ताप्पा इटके।

आर्य समाज परली में आयोजित बहकुण्डीय यज्ञ में प्रार्थना गीत गाते हुए वैदिक विद्वान आचार्य आनंदजी पुरुषार्थी, पं.अजय आर्य, पं.वीरेंद्रजी शास्त्री।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र


# वैदिक गर्जना


सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११७ | कलि संवत् ५११७ | विक्रम संवत् २०७३

दयानन्दाब्द १९३ | माघ/फाल्गुन | १० मार्च २०१७



प्रधान सम्पादक
**माधव के.देशपांडे**
(९८२२२९५५४५)

मार्गदर्शक सम्पादक
**डॉ.ब्रह्ममुनि**
(९४२१९५११९०४)

सम्पादक
**डॉ.नयनकुमार आचार्य**
(९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - **प्रा.देवदत्त तुंगार, प्रा.ओमप्रकाश होलीकर, प्रा.सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य**


## अनुक्रम

### हिन्दी विभाग


१) सम्पादकीय ........ ५
२) आओ समझे× होली का वास्तविक स्वरुप ........ ७
३) ÷आर्य समाज'- तर्क की सर्वश्रेष्ठता ........ ११
४) लातूर में आर्यसेवक गौरव समारोह ........ १३
५) क्या मोक्ष में मुक्तात्मा दुखी व संतप्त होगा ? ........ १४
६) समाचार दर्पण ........ १६
७) शोक समाचार ........ १८


### मराठी विभाग


१) शिवछत्रपतींना व क्रांतिवीरांना नमन ........ २०
२) श.भगतसिंहांवर आर्य समाजाचा प्रभाव ........ २१
३) आर्य समाज आणि महाराष्ट्र ........ २३
४) निमंत्रण आर्य सेवकांच्या गौरव समारंभाचे× ........ २४
५) प्रेरणेचा दीपस्तंभ-आर्य समाज लातूर ........ २७
६) शोकवार्ता ........ ३१
७) वार्ताविशेष ........ ३२



✻ प्रकाशक ✻
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज,
परली-वैजनाथ ४३१५१५

✻ मुद्रक ✻
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज, परली-वै.

वैदिक गर्जना के शुल्क
वार्षिक रु.१००/-
आजीवन रु.१०००/-



इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा ।

श्रुतिसुगंध

## ईश्वराज्ञा से ही दीर्घायु की प्राप्ति

**इमं जीवेभ्य: परिधिं दधामि मैषां नु गादपरोऽअर्थमेतम्।**

**शतं जीवन्तु शरद: पुरुचीरन्तर्मृत्युं दधतां पर्वतेन।।** (यजु.३५/१५)

**पदार्थान्वय–** मैं परमेश्वर **(एषाम्)** इन जीवों के **(एतम्)** परिश्रम से प्राप्त किये **(अर्थम्)** द्रव्य को**(अपर:)** अन्य कोई **(मा)** नहीं**(नु)** शीघ्र**(गात्)** प्राप्त कर लेवे, इस प्रकार **(इमम्)** इस**(जीवेभ्य:)** जीवों के लिए**(परिधिम्)** मर्यादा को**(दधामि)** व्यवस्थित करता हूं। इस प्रकार आचरण करते हुए आप लोग **(पुरुची:)** बहुत वर्षों के सम्बन्धी **(शतम्)** सौ **(शरद:)** शरद् ऋतुओं भर**(जीवन्तु)** जीवो।**(पर्वतेन)**ज्ञान वा ब्रह्मचर्यादि से **(मृत्युम्)** मृत्यु को**(अन्त:)** **(दधताम)** दबाओ अर्थात् दूर करो।

**भावार्थ** – हे मनुष्यों × जो लोग, परमेश्वर ने नियत किया कि धर्म का आचरण करना और अधर्म का आचरण छोडना चाहिए, इस मर्यादा को उल्लंघन नहीं करते, अन्याय से दूसरे के पदार्थों को नहीं लेते, वे नीरोग होकर सौ वर्ष तक जी सकते है और ईश्वराज्ञाविरोधी नहीं । जो पूर्ण ब्रह्मचर्य से विद्या पढकर धर्म का आचरण करते हैं, उनको मृत्यु मध्य में नहीं दबाता।

**(महर्षि दयानंद कृत यजुर्वेद भाष्य से साभार)**

**वेदोद्धारक, विश्ववन्द्य महर्षि दयानंद सरस्वती द्वारा**

**सन् १८७५ में संस्थापित विश्वकल्याणकारी सर्वश्रेष्ठ संगठन**

# आर्य समाज के १४२ वें स्थापना दिवस पर तथा

# ÷भारतीय नववर्ष (गुडीपाडवा) चैत्र प्रतिपदा’

**इस पावन पर्व पर सभी देशवासियों को**

**हार्दिक शुभकामनाएं व अभिनन्दन ×**

**नया वर्ष आर्यों को नये शुभ संकल्प के लिए प्रेरणा देवें ×**

**संपादकीयम्**

# हमारा आर्य समाज...

आज से १४२ वर्ष पूर्व महान युगपुरुष महर्षि दयानन्द ने मुंबई में आर्य समाज की नींव रखी थी। इतने वर्षों में इस संस्था ने अपने नियमों व उद्दिष्टों के अनुसार विश्व में लगभग सभी क्षेत्र में क्रान्तिकारी कार्य किये । अपने विशुद्ध वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर यह मानवकल्याणकारी संगठन आज भी उतनी ही दृढता के साथ टिका है । इसे व्यापक रुप प्रदान करने में तब से लेकर अबतक स्वामीजी के अनुयायियों की अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। कोई भी संगठन तभी जीवित रहता है, जिसके संस्थापक, उद्देश्य व प्रचारक ईश्वरीय मूलभूत तत्वों के अनुसार चलते हो ।

महर्षि दयानन्द वे महापुरुष थे, जिन्होंने ऋषियों की दिव्यतम वेदोक्त परम्परा का निर्वहन किया। अन्य समकालीन सुधारकों के समान उनका जीवन किसी बात में अधूरा नहीं था। उनका चिन्तन व दृष्टिकोन एकांगपूर्ण कभी नहीं रहा। किसी भी बात में वे अन्यों की भांति प्रतिक्रियावादी नहीं बनें × प्राचीन वैदिक तत्वज्ञान के मूलभूत स्त्रोत को उन्होंने तर्क व बडे साहस के साथ बिना हिचकिचाहट के संसार में प्रवाहित किया। उनके समकालीन म.फूले, राजा राममोहनराय तथा बाद के स्वामी विवेकानन्दादि सत्पुरुषों ने पाश्चात्य व पौराणिक विचारों के साथ समझौता करते हुए अपने विचार रखें और इन्हीं के आधार पर अपनी संस्थाएं भी चलाई। लेकिन महर्षि दयानन्द ने वेदप्रतिपादित विचारों को डंके की चोट के साथ अपने संगठन का आधार बनाया। आज उपरोक्त सुधारकों के संगठनों का नामोनिशान भी नहीं रहा है । महाराष्ट्र में फूले के सत्यशोधक समाज का नाम लेकर स्वयं को प्रगतिशील(पुरोगामी) होने का दावा करते हैं, किन्तु इस संस्था का अस्तित्व आज न के बराबर है। बंगाल में राजाराम मोहनराय का ÷ब्राह्मो समाज' की स्थिति भी ऐसी ही है । अन्य संगठनों की तो बात ही क्या कहे ?

बडे गर्व के साथ लिखना पड रहा है कि आज आर्य समाज का ध्वज अपने सिद्धान्तों को लेकर उतने ही जोश के साथ लहर रहा है। भले ही कार्यकर्त्ताओं का अभाव हो या पदाधिकारियों की कमियाँ× किन्तु जब तक दयानन्द का एक भी प्रखर सिद्धान्तनिष्ठ अनुयायी व कार्यकर्त्ता इस धराजल पर जीवित रहेगा, तब तक आर्य समाज का अस्तित्व बना रहेगा। इसका एकमात्र कारण इस संगठन के तर्कसंगत, विज्ञाननिष्ठ व सृष्टिनियमों पर आधारित विचार हैं । आर्य समाज के मूल में व्यापक सत्य छिपा है, जिसमें संसार के कोने-कोनें में रहनेवाले प्राणिमात्र का सम्पूर्ण शाश्वत कल्याण निहित है। आर्य समाज उन बिन्दुओं का प्रबल पक्षधर है, जो आत्मा, परमात्मा व प्रकृति के मूलभूत तत्वों के साथ जुडे हैं। ÷वेदमाता' जिनका प्रतिपादन कर संसार को सुख-

समृद्धि का रास्ता बताती है, उन मूल्यों को जन-जन तक फैलाना आर्य समाज अपना परम धर्म समझता है। समय-समय पर समाज में बढती अविद्या, पाखण्ड, अनैतिकता, भ्रष्टाचार, अनाचार तथा अन्य गम्भीरतम समस्याओं की मूलभूत अचूक औषधि आर्य समाज के पास है। यह चिकित्सक सभी बिमारियों के इलाज के लिए अहर्निश बैठा है।

किसी एक मित्र ने हमसे कहा कि, यदि इन सारी गम्भीर समस्याओं का समाधान आर्य समाज के पास है, तो फिर विश्व में दिन-प्रतिदिन बिमारियाँ क्यों फैलती जा रही है? समाज धूं-धूं कर क्यों जल रहा है ? हमने कहा- आज के इन रोगियों को सही अर्थों में अपनी बिमारियों का इलाज करना ही नही है। अज्ञान व अविद्या में पडे रहकर अपना रोग बढाये रखने की मनोवृत्ति ने हर एक को घेर रखा है। इसी कारण आज यह हाल है। आर्य समाज के पास सभी समस्याओं के उपाय हैं; किन्तु कोई नहीं चाहता कि इनसे छुटकारा पाने के लिए आर्य समाज के सत्संग, सम्मेलन, समारोहादि कार्यक्रमों जायें × केवल आर्य समाजी लोगों के गलतियों की ओर अंगुलीनिर्देश कर अपना बचाव करना सभी को भांता है। लेकिन कोई भी व्यक्ति जिज्ञासा भाव लेकर आर्य समाज की ओर आने के लिए तैयार नहीं है।

सबसे आश्चर्य की बात तो यह है कि आर्य समाज को आन्तरिक और बाह्य से संकटों ने घेर रखा है। आन्तरिक यह की आर्य समाजी ही सही अर्थों में ÷आर्य' बनना नहीं चाहते। आर्य समाज यह हमारी माता हैं, किन्तु ÷मात्रा भवतु सम्मना।' इस वेदवचनानुसार इस माता के मन के अनुकुल पुत्र चलना नहीं चाहता। आर्यपुत्रों का आध्यात्मिकता ओर झुकाव नहीं है। सिद्धान्तों के अनुकूल चलनेवाले पक्के आर्य समाजी ढूंढकर भी कम ही मिलेंगें। वैदिक विचारों की आत्मा, मन, वाणी व कर्म में एकसमानता हममें कितने अंशों में विद्यमान है ? सामान्य आर्य कार्यकर्ता व सदस्यों से लेकर उच्च कोटि के विद्वानों, आर्य नेताओं तक का सैद्धान्तिक पक्ष मजबूत नहीं दिखाई देता ? तब आर्य समाज का प्रसार व प्रभाव कैसे बढेगा ? यह हम सबके लिए चिन्ता का नहीं, चिन्तन का विषय है...× आओ, इस पर सोचें और ÷आर्य समाज स्थापना दिवस' पर सच्चे अर्थों में ÷आर्य' व ÷आर्य समाजी' बनने का प्रयास करें ×

**- नयनकुमार आचार्य**

## प्रान्तीय सभा अन्तरंग व साधारण बैठक-सूचना

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग व साधारण सभा बैठक मार्च के अन्तिम सप्ताह या अप्रैल के पहले माह में परली में आयोजित की गयी है। तिथि निश्चित होने पर सभी सदस्यों को परिपत्रक व मोबाईल संदेशद्वारा इसकी सूचना दी जायेगी। अत: अन्तरंग व साधारण सदस्य बैठक में अवश्य पधारें। - **सभामन्त्री**

# आओ समझें× होली का वास्तविक स्वरुप

– डॉ.गंगाशरण आर्य

भारतीय पर्वों की सबसे बडी विशेषता यही है कि वे प्रकृति व ऋतुओं पर आधारित हैं, ऋतुओं के परिवर्तन के साथ–साथ पर्व आते रहते हैं जिनमें होली भी प्रसिद्ध है। इसे ÷नवसस्येष्टि पर्व' भी कहा जाता है । हिन्दुओं के पंचांग के अनुसार होली भारतीय सम्वत वर्ष का अंतिम त्यौहार है । यह फाल्गुन मास की पूर्णिमा के दिन मनाया जाता है।

भारतवर्ष के प्राचीन समाज में होली मनाने की प्राचीन परंपरा से वर्तमान की यदि तुलना की जाये तो यह अत्यंत निम्न कोटि की ही परंपरा कही जायेगी । प्राचीन काल में ऋषि लोग इस पावन पर्व पर विशाल यज्ञों का आयोजन किया करते थे। इन विशाल यज्ञों में सर्वजण कल्याणार्थ आहुतियाँ अर्पित की जाती थी । यही विशाल यज्ञ धीरे–धीरे सारे गाँवों और नगरों केसामूहिक यज्ञ बन गये । पुनश्च इन सामूहिक यज्ञों ने पुराणकाल के भारतीय पतनकाल में होलिका दहन का स्वरुप लिया। इस काल में भी यह बात अच्छी रहीं कि सारा गांव एक ही होलिका का दहन करता था और कोई ब्राह्मण कुछ न कुछ मंत्रों का उच्चारण कर वातावरण को अच्छा बनाने का प्रयत्न करता था। इसके पश्चात् यह प्रक्रिया भी क्षीण से क्षीणतर होती चली गयी। जिसने आज का विकृत और घिनौना स्वरुप ले लिया। आजकल तो गांवों में सारे गांव की एक होली नहीं जलती, अपितु मुहल्ले–मुहल्ले की अलग–अलग होली जलती है । यह प्रवृत्ति हमारी विखंडित सोच की सूचक है। कृति में विखंडन, वृत्ति का विखण्डन का परिणाम है । होली तो समाजवाद की दिशा में हमारे ऋषि पूर्वजों द्वारा उठाया गया एक सराहनीय पग था। आज यह पर्व समाजवाद के स्थान पर विघटन के बीज बो रहा है । व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष की घृणित वृत्ति को इस पर्व पर अग्नि को समर्पित कर हृदय की शुद्धता और पवित्रता पर ध्यान केन्द्रित करता था। इस प्राचीन परंपरा के स्थान पर आजकल व्यक्ति ईर्ष्या और द्वेष के सर्प को पूरे वर्ष दूध पिलाता है और होली आने तक उसे पूर्ण रुपेण पाल–पोसकर नवयुवक बना डालता है। यौवन की मदोन्मत्तता उसे किसी से गले मिलने को नहीं अपितु किसी का गला काटने के लिए प्रेरित करती है । अत: आज के दूषित परिवेश में इस पर्व की पावनता को मानव की प्रतिशोध की भावना ने इस प्रकार विषैला बना डाला है। यह पर्व हमें तोडने

की नहीं जोडने की शिक्षा देता है। इसलिए हे मानव × गला काटने का घिनौना खेल छोड, इस पर्व के माध्यम से सामाजिक समरसता की स्थापना में सहायक बन× इसी से तेरे जीवन का कल्याण होगा ।

## होली का वास्तविक स्वरुप एवं वैज्ञानिक रहस्य :

इस पर्व का प्राचीनतम नाम वासन्ती नवसस्येष्टि है। (वासन्ती = वसन्त ऋतु में, नव=नये, सस्य=अनाज, इष्टि=यज्ञ।) अर्थात् बसन्त ऋतु के नये अनाजों से किया हुआ यज्ञ, परन्तु होली शब्द होलक का अपभ्रंश है अर्थात् बिगडा हुआ स्वरुप है। उदाहरण स्वरुप ऐतिहासिक ग्रंथ रामायण के कुछ विशेष तथ्य जिनमें मिलावट की गई है। यथा- ÷सीताजी की माता का नाम ÷सुनैना धरणी' था।' मगर कुछ धूर्त पेटार्थी ब्राह्मणों के द्वारा धरणी की जगह ÷धरती' करके जनकपुत्री सीता को गाजर, मूली की तरह धरती से उत्पन्न बताकर इतिहास की हत्या कर दी गई है । इसी प्रकार हनुमान की माता अंजना व पिता पवन बिना पूँछ के थे पर वीर हनुमान की सर्वत्र पूछ को पूँछ बताकर ÷बन्दर' बना दिया। जो पृथ्वी से १३ लाख गुणा बडा सूर्य मूख में निगल गया । इसी प्रकार चार वेद, छः शास्त्रों के ज्ञाता होने के कारण महाबली रावण को ÷दशानन' की उपाधि से सुशोभित किया गया था। लेकिन यहाँ भी धूर्तो ने दशानन का अर्थ दशमुख वाला कर दिया। इसी प्रकार होली शब्द का प्रयोग ÷होलक' शब्द को बिगाड कर किया गया है । इसके साथ-साथ ÷होलिका' हिंदू पंचांग के अनुसार वर्ष का अंतिम पर्व है, तो इसका हिंदू संवत् में वर्ष का अंतिम पर्व होना और इसे समाज में परंपरानुसार ÷होली' कहना इसके एक अन्य गूढ अर्थ और कारण की ओर भी हमारा ध्यान आकृष्ट करता है । इस पर्व पर जो यज्ञ किया जाता था, उसमें हमारे पूर्वज लोग विशेषत: हमारे ऋषिगण हमसे अपने पूरे वर्ष के गलत कार्यों का प्रायश्चित भी कराया करते थे । जिसके अनुसार उन गलत कार्यों की नववर्ष में पुनरावृत्ति से कार्य करती थी । इसलिए भी इस पर्व को होली कहा जाने लगा। लोकाचार में प्रचलित भी है कि जो ÷हो ली सो होली' अर्थात् जो कुछ भी वर्ष भर में आपस में मनमुटाव अथवा वैरभाव था, उसे दिल से निकालकर परस्पर प्रेम की भावना जागृत करें। सदाचार, समरसता आदि मानवीय भाव हमारे जीवन के आभूषण हो। जिस प्रकार पेड-पौधों की नवीन कोमल पत्तियाँ अपने साथ-ही-साथ फल की प्रतीक बौर को लाकर उन्हें सभी प्राणियों के लिए उपयोगी एवं फलदायी बना डालती है, उसी प्रकार हमारा जीवन भी पूरे समाज के लिए उपयोगी व फलदायी हो। प्रकृति का कैसा नियम है कि पुराने पत्तों को छोडकर पतझड के पश्चात्

पेड-पौधों पर जब नवीन पत्तियाँ आती हैं, तो अपने साथ फल की बौर भी लाती है। मानों ये कह रहीं हो कि पुरानी बात समाप्त हुई, अब नया संदेश रचेंगें । **÷÷छोडो कल की बातें, कल की बात पुरानी, नए दौर में लिखेंगे, मिलकर नई कहानी।''** मानव भी इसी भावना से अपनी जीवन शैली का विकास करे, तो यह वसुन्धरा स्वर्ग समान हो जाए। यही संदेश हमारा पावन पर्व होली हमें देता है। इसलिए भी होलक शब्द हटाकर ÷होली' का प्रयोग किया गया एवं अधजले अन्न को **÷होलक'** कहते हैं । इसी कारण इस पर्व का नाम **÷होलिकोत्सव'** है। भारतीय ऋषि आविष्कृत वैदिक पर्व प्रणाली में होलिकोत्सव फाल्गुन मास में जिस समय आता है, उस समय सारी प्रकृति में परिवर्तन की प्रतीति अनुभव होती है । पेड-पौधे नई-नई पत्तियों सडे भलीभांति लद गये होते हैं, आम आदि के पौधों पर बौर आ रहा होता है । फसल में हल्का पीलापन छा जाता है। खेतों की लहलहाती फसल को देखकर किसान का अंतर्मन भी लहलहाने लगता है । पशु-पक्षी तक अपना रंग बदलने लगते हैं। पुराने पंख छोडकर उसी प्रकार नये रंग के पंखों में रंग जाते है। जिस प्रकार पेड-पौधे पुराने पत्तों का परित्याग कर पुनः नये पत्तों को ग्रहण कर अपना श्रृंगार करके दुल्हन की भांति सजग खडे हो जाते हैं । गाय आदि पशु भी अपने रोम डालते हैं । नये रोम आकर उन्हें भी नया श्रृंगार पहना डालते हैं। और तो और परिवर्तन की लहर दौडी सी अनुभव होती है । प्रकृति अपना रुप परिवर्तित कर पुनः सज धजकर नव वधू सी लगने लगती है। इसी समय किसान अपने खेत पर षाढी की फसल-गेहूँ, जौ, चना व मटर आदि की अधपकी फसल को भूनकर खाता हुआ बहुत ही मस्ती का अनुभव करता है । इस अधपके अन्न को भूनकर खाने को वह ÷होला' कहता है। इस वैज्ञानिक सत्य को पौराणिक पंडित किसी कथानक से नहीं जोड पाये । उन्हें वह होला ही क्यों कहता है ? होलिका का भाई कहीं होलक अथवा होला तो नहीं था ?

नहीं, ऐसा नहीं हैं। अपितु संस्कृत में अधपके अन्न को होलक कहते हैं - **तृणाग्निं भ्रष्टार्ध्दपक्व शमीधान्यं होलकः। होला इति हिंदी भाषा।**(शब्द कल्पद्रुम कोष) अर्थात् तिनको की अग्नि में भूने हुए अधपके शमीधान्य फली वाले अन्न को ÷होलक' कहते हैं, जिसे हिंदी में होला कहते है । ÷भावप्रकाश' ग्रन्थ के अनुसार- अर्ध्दपक्वशमीधान्यैस्तृणाभ्रष्टैश्च होलकः।होलकोऽल्पानिलो मेदःकफदोषश्रमापहः भवेदथो होलको यस्य तत्तद्गुणो भवेत्। अर्थात् तिनकों की अग्नि में भुने हुए (अधपके) शमी-धान्य (फली

वाले अन्न) को होलक कहते हैं। यह होला स्वल्पवात है और यह मेद, कफ और थकान के दोषों का शमन करता है अर्थात् उन्हें समाप्त करता है। जिस-जिस अन्न का होला होता है, उसमें उसी-उसी अन्न का गुण होता है। बसन्त ऋतु में नए अन्न से (इष्टि) यज्ञ करते हैं, इसीलिए इस पर्व का नाम **÷वासन्ती नवसस्येष्टि**' है। ÷होलक' का यह स्वास्थ्यवर्धक व सुहावना मौसम ही होलिका का जनक है। आप प्रतिवर्ष होली जलाते हो, उसमें ÷आखत' डालते हो, जो आखत है वो ÷अक्षत' का अपभ्रंश रुप है, अक्षत चावल को कहते हैं। अवधी भाषा में आखत(अक्षत) आहुति को कहते हैं। आहुति चाहे चावल की हो अथवा गेहूँ व जौ की बाल की हो यह सब यज्ञ की ही प्रक्रिया है। क्योंकि यज्ञ में स्विष्टकृत् आहुति चावल अथवा गेहुँ के बने अन्न से दी जाती है। इसी प्रकार जो आप जल के द्वारा होली की परिक्रमा करते हैं, वह क्रिया भी यज्ञ में जल प्रसेचन की प्रक्रिया है, जो कि यजमान के द्वारा सम्पन्न की जाती है। पूर्वकाल में भारतवर्ष में नवसस्येप्टि यज्ञ सामूहिक रुप से किए जाते थे। यह यज्ञ शरद ऋतु की पूर्णिमा की अमावस्या व ग्रीप्म ऋतु की पूर्णिमा को किए जाते थे। चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) परस्पर मिलकर इस होलीरुपी विशाल यज्ञ को सम्पन्न करते थे और भी एक कारण इसके पीछे यह था कि प्राचीन आर्य लोग अग्निहोत्र के द्वारा वायुशुद्धि तथा आरोग्य प्राप्त किया करते थे। वैसे तो भारत में प्रत्येक कार्य करने से पूर्व हवन किया जाता है, किन्तु विशेषरुप से ऋतु परिवर्तन (ऋतु-सन्धि) के समय बृहद् यज्ञों का प्राचीनकाल से ही प्रचलन रहा है। इसका कारण यह है कि ऋतु-सन्धि अनेक रोग उत्पन्न करती है। इस व्याधियों का निवारण भैषज्य(औषध) यज्ञों के द्वारा होता है। शतपथब्राह्मण में इसकी पुष्टि की गई है-**÷भैषज्ययज्ञा वा एते। ऋतुसन्धिषु व्याधिर्जायते तस्माद्दतुसन्धिषु प्रयुज्यन्ते।**' अर्थात् ये भैषज्य यज्ञ कहलाते हैं। ऋतुओं की सन्धि में व्याधियाँ उत्पन्न होती हैं, इसलिए इनका प्रयोग ऋतु-सन्धि में होता है। भारतीय घरों में नया अन्न अग्नि में अर्पित किये बिना प्रयोग में नहीं लाया जाता था। प्रत्येक ऋतु में उस ऋतु के पदार्थों द्वारा यज्ञ करने की प्रथा रहीं है। सम्भवत: विशेष मौसम में उत्पन्न होनेवाले पदार्थ उस समय के रोगों को दूर करने में अधिक उपयोगी होंगे। इसलिए उनके निवारण के लिए यह यज्ञ किये जाते थे, यह होली हेमन्त और बसन्त ऋतु का योग है, रोग निवारण के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम साधन है।

**- सैनी मोहल्ला, ग्राम शाहवाद,**
**मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-६१**
**मो. ९८७१६४४१९५**

# ÷आर्य समाज’ - तर्क की सर्वश्रेष्ठता

मुंबई से प्रकाशित अंग्रेजी अखबार दै.टाईम्स ऑफ इण्डिया (दि.१९.०२.२०१७) में÷Arya Samaj - Supremacy of reason’ इस शीर्षक से प्रसिद्ध हुए संपादकीय लेख का सरल हिन्दी अनुवाद पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है। –सम्पादक

❖ मूल लेखक– भारतेन्दु सूद

❖ अनुवादक – प्रा.शरदचंद्र डुमणे

महर्षि दयानंद ने सन् १८७५ में आर्यसमाज की स्थापना की थी। जिसका निनादित अस्तित्त्व देश की स्वतंत्रता(१९४७) से पूर्व उत्तर भारत में बहुत जाना पहचाना गया। उस समय आर्य समाज से प्रेरणा लेनेवाले स्वतंत्रता सेनानी लगभग ८० फीसदी हुवे, ऐसा प्रसिद्ध इतिहासकार पन्नीकर का कहना है।

स्वामी दयानन्द जिन्होंने **÷वेदों की ओर लौटों’** यह उद्घोष किया। वेदों का गहरा अध्ययन कर उसका प्रचलित सामाजिक और धार्मिक अवस्था में क्या अन्वयार्थ यथोचित हो सकता है? इसपर मार्गदर्शन किया। उन्होंने धर्म और समाज का सीधा सम्बन्ध खोज निकाला। धर्म की उंची-उंची मान्यताएँ केवल मन्त्रों के उच्चारण तक सीमित न होकर समाज को उँचा उठाने के लिए होनी चाहिए, ऐसा उन्होंने प्रतिपादित किया।

महर्षि दयानन्द ने अपनी सर्वोत्तम कृति **÷सत्यार्थ प्रकाश’** में वेद जैसे पवित्र ग्रन्थ की तार्किकता सामने रखी(प्रस्तुत की)। स्वार्थी लोगों के द्वारा लगाये गये विपरित अर्थों पदों को उन्होंने कभी नहीं स्वीकार किया। यही तर्क की सर्वश्रेष्ठता उनका हथियार थी। इसी के द्वारा उन्होंने हिंदू समाज में प्रचलित असंख्य कुरीतियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध धर्मयुद्ध छेड दिया। जन्म से जाति निश्चित मानना हो या लिंगभेद पर आधारित व्यवहार इन दोनों की भर्त्सना स्वामीजीने तर्क की शुद्धता के आधार पर की। केवल शिक्षा से ही सामाजिक बुराइयाँ और अज्ञान दूर हो सकेंगे, ऐसा उनका अनुमान था। स्वामीजी के इन्हीं विचारों के फलस्वरुप १००० से अधिक डी.ए.वी. संस्थाएँ व ३०० से अधिक गुरुकुल व पाठशालाएँ खोले गए। महर्षि अरविंद ने स्वामी दयानन्द का गुणगान करते हुए कहा है कि ÷स्वामी दयानन्द एक सर्वश्रेष्ठ ऋषि हुवे।’

राष्ट्रिय जागरण और दास्यत्व ये परस्परविरोधी हैं। इसलिए राष्ट्र जागरण को प्राथमिकता देते हुए उन्होंने उत्तर भारत के विशेषकर लाहौर को केन्द्र बनाया था,

जो कि उस समय अविभक्त भारत में था और आजकल पाकिस्तान में है । उन्होंने हजारों मध्यमवर्गियों को स्वतंत्रता संग्राम में शामिल होने की प्रेरणा दी ।

किसी एक विशिष्ट जाति, धर्म, भौगोलिक सीमाएँ इन सबसे उपर उठकर **÷वसुधैव कुटुम्बकम्'** का नारा उन्होंने बुलंद किया। जिसके कारण मुस्लीम और ख्रिश्चन भी उनके भक्त हुए । लाहौर में अपने सिद्धांतों का प्रचार करने हेतु जब वे गए, तो वहाँ के एक मुस्लीम भक्त ने अपनी कोठी पर उनके ठहरने की व्यवस्था की, यह इस बात का प्रमाण है । अलीगढ मुस्लीम विश्वविद्यालय के संस्थापक सर सय्यद अहमद खान भी स्वामी दयानंद के बडे प्रशंसक रहे हैं । उसी तरह फादर स्कॉट ने स्वामीजी के भाषणों को नियमित श्रवण करने का नियम बनाया था। लाहौर में स्थापित आर्य समाज बाद में सभी धर्मों के व्यक्तियों का स्वतंत्रता संग्राम केंद्र बना ।

संस्थाएँ अवांछित लोगों के हाथ में आने पर वे अपनी आकर्षणशक्ति खो देती हैं । आर्यसमाज के साथ भी यही हुआ। सन १९२१ में आर.एस्.एस्.ने स्थापना के पश्चात आर्यसमाज को अपनी उडान का भूतल बनाया और धीरे-धीरे दांयी विचारधारा के लोगों ने कब्जा जमाया ।

नये नेतृत्त्व ने आर्यसमाज का नामकरण केवल अग्निहोत्र करनेवाले और संस्कृत को चाहनेवाले लोगों की संस्था के रुप में किया। इसका परिणाम यह हुआ कि जो एक समय में गतिशील संस्था रही, वह आज बिलकुल उस रुप में नहीं रही और जिसको कभी सामाजिक उत्क्रांति का अग्रणी केंद्र माना गया था, वह भी समाप्त हुआ ।

तर्क की शुद्धता का सिद्धान्त, जो कि स्वामी दयानंद ने पुरस्कृत किया और ÷वेद परमोच्च हैं', ऐसा उन्होंने बताया। आज भी जहाँ ८० प्रतिशत जन अंध:कार एवम् अंधविश्वास में फंसे हुए हैं, इस अवस्था मं आर्य समाज यदि अपने पुरानी पहचान के अनुरुप कार्य करे, तो आश्चर्यकारक परिणाम दिखा सकता है ।

यदि यह आर्य समाज संस्था सामाजिक सेवा, पिछडे वर्गों के व्यक्तियों का कल्याण, जरूरतमन्दों की देखभाल और समाज की बुराइयाँ मिटानेवाले कार्य कर विभिन्न संप्रदायों के लोगों के बीच समन्वय व सद्भाव स्थापित करने के प्रयास करें और अपने आर्यसमाज सिद्धांतों के साथ दृढ रुपेण चिपकी रहेगी, तो वह पुन:श्च अपनी गरिमा को प्राप्त कर सकेगी।

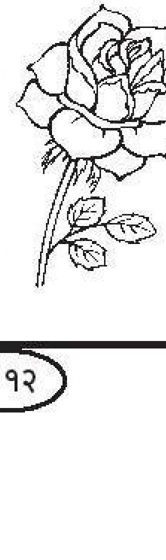

**-डी.आर.दास सदन,**
**सिग्नल कॅम्प, लातूर**
**मो.९४२०४३४६२३**

***

## महाराष्ट्र सभा द्वारा लातूर में हो रहा है

# विचारकों, लेखकों व आर्यसेवकों का गौरव

वैदिक विचारों को जीवन में उतारकर समाजसेवा, शिक्षाप्रसार, साहित्य निर्माण, राष्ट्रकार्य एवं वेदधर्म प्रचारादि क्षेत्रों में यथाशक्ति योगदान देनेवाले महर्षि दयानंद के परम अनुयायियों के जीवन के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के उद्देश्य से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा उनका गौरव कर रही है । लातूर के गांधी चौक आर्य समाज के ८२ वें वार्षिकोत्सव पर दि.१५ मार्च २०१७ को दोपहर २ बजे इस कृतज्ञतापूर्व गौरव समारोह का आयोजन हो रहा है। जो दिवंगत हुए हैं तथा सम्प्रति अपनी आयु के ७५ वर्ष पार कर चुके हैं, ऐसे आर्य महानुभावों को इस समारोह में सम्मानित किया जाएगा।

जानेमाने शिक्षाविद् व विचारक डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे सहित महाराष्ट्र आर्य जगत् के कई लब्धप्रतिब्ध आर्यविद्वानों, लेखकों, प्रचारकों, स्वतन्त्रता सेनानियों, कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ताओं, गुरुकुल की स्नातिकाओं व उपदेशकों का इस विशाल समारोह में गौरव किया जायेगा । सभा के वरिष्ठ संरक्षक व तपस्वी संन्यासी श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी सरस्वती की अध्यक्षता में तथा उन्हीं के शुभकरकमलों से और वैदिक विद्वान् पं.मोहितजी शास्त्री(बिजनौर,उ.प्र.), पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर) एवं अन्य महानुभावों की प्रमुख उपस्थिति में यह गौरव कार्यक्रम सम्पन्न हो रहा है।

आर्य समाज के मानवतावादी विचारों से प्रेरणा पाकर अपने जीवन को पवित्र बनानेवाले तथा प्राप्त ज्ञान को समाज के कल्याण हेतु उपयोग में लानेवाले सभी जीवित व दिवंगत आर्य सज्जनों व माताओं के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना, प्रांतीय सभा अपना परम कर्तव्य समझती है । इससे नई पीढी को प्रेरणा मिलेगी और हमारी सम्मान देने की परम्परा भी जीवित रहेगी ।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा प्रतिवर्ष अपने इन पूर्वजों का गौरव करती है। पिछले वर्ष लगभग १६ आर्य सेवकों का गौरव हुआ था। इस वर्ष भी गौरव की यह परम्परा जारी रखी गयी है। अत: इस समारोह में आर्यजनों का पधारने का अनुरोध महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवराव देशपाण्डे, संयोजक प्रो.ओमप्रकाशजी होलीकर (विद्यालंकार) व अन्य पदाधिकारी तथा आर्य समाज गांधी चौक, लातूर के पदाधिकारियों ने किया है ।

**(विस्तृत जानकारी मराठी विभाग में)**

# क्या मोक्ष में मुक्तात्मा दुखी व संतप्त होगा ?

**- आचार्य आनंद पुरुषार्थी**

२२ मई से २८ मई २०१६ की ÷आर्य जगत्' साप्ताहिक पत्रिका में ÷मुक्त दयानंद मोक्ष में आर्य समाज की दुर्दशा से दुखी व संतप्त' शीर्षक से देहरादून के श्री मनमोहनकुमार आर्यजी का लेख प्रकाशित हुआ है । लेखक ने लिखा है- ÷हिन्दुओं व आर्यों की वैदिक धर्म के प्रति उपेक्षा को देखकर ऋषि दयानंद व गुरुवर विरजानंद मोक्ष में अवश्य खून के आंसू पीते होंगे । आर्य अधिकारियों के पास अवश्य आते जाते होंगें व हर्ष शोक करते होंगें...। परस्पर के संघर्ष को देख अवश्य ही दु:खी होते होंगें।' लेखक श्री आर्य जी ने ÷सर्वश्री स्वामी श्रद्धानंद, पंडित गुरुदत्त विद्यार्थी, महाशय राजपाल, पंडित लेखराम, स्वामी दर्शनानंद, स्वामी वेदानन्द, आचार्य रामनाथ वेदालंकार जी आदि आदि के मोक्ष की सम्भावना व्यक्त की है और आर्यों के वर्तमानकालिक आचरणों को देख ये सब भी दुखी होते होंगें', ऐसा लिखा है ।

हमारे मित्र श्री मनमोहन कुमार जी के बारे में यह प्रसिद्धि है कि आप प्रतिदिन एक लेख लिखते हैं । आपके अनेक लेखों को मेल व आर्य पत्रिकाओं में अनेकों बार पढने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। अत: हम आपके प्रशंसक भी हैं, पर आर्यों को प्रेरणा देने के उत्तम भावों के वशीभूत हो आप ने जो लिखा उस विषय में हमारा इतना ही निवेदन है कि ऋषि दयानंद के अतिरिक्त ऊपरी लिखित सभी आर्य महानुभाव, आर्य विद्वान् व आर्य नेतृगण, जिनको आपने मोक्ष का पात्र माना है, उनका वैदिक संस्कृति के रक्षण व प्रचार-प्रसार में अप्रतिम अद्वितीय योगदान दिया है, इसमें तो कोई २ मत नहीं है पर असम्प्रज्ञात समाधि व विदेह स्थिति प्राप्त कर ये सभी मोक्ष प्राप्त कर चुके होंगें, प्रथम दृष्ट्या ऐसा लगता नहीं है । दूसरा निवेदन है कि मोक्ष प्राप्ति के उपरांत विभिन्न स्थलों पर विचरण करने की बात तो स्वीकार की भी जा सकती है, पर मुक्त आत्माओं का दुखी व संतप्त होना सिद्धांत विरुद्धसा लगता है । मोक्षप्राप्ति के लिए जिस योग मार्ग पर चलकर साधक अध्यात्म की उंचाईयों पर चढता है, उस सम्बन्ध में बात करें।

योग दर्शन के विभूति पाद के ५१ वे सूत्र **÷स्थान्युप निमंत्रणे संगस्मयाकरण पुन: अनिष्टप्रसंगात्'** के भाष्य में महर्षि व्यास जी ने ४ प्रकार के योगियों का वर्णन किया है । प्राथमकल्पिक, मधुभूमिक, प्रज्ञाज्योति व अतिक्रान्त भावनीय। इसमें तृतीय श्रेणी के योगी प्रज्ञाज्योति के लिए **÷भूतेन्द्रिय जयी सर्वेषु भावितेषु**

**भावनीयेषु कृत रक्षाबन्धः कर्तव्यसाधनादिमान।'** कहा है। मुक्ति से पूर्व ही योगी को यह अवस्था प्राप्त हो जाती है कि वह किसी भी प्रकार की आसक्ति से बचने के लिए दृढ अभ्यासी हो चुका होता है। अब उसके संसार की बातों से सुखी-दुखी होने की कोई संभावना ही नहीं रहती है। दूसरी श्रेणी के अकुसीद योगी (योगदर्शन कैवल्य २९) के लिए नहीं है। किसी संस्था या व्यक्ति के किसी उत्थान पतन को देखकर यथोचित व्यवस्था करना एक बात है और दुखी वा संतप्त होना अलग बात। जब सशरीर आत्मा में ही यह उन्नत अवस्था हो चुकी होती है, तो मोक्ष में तो असम्भव ही है।

भिद्यते हृदय ग्रन्थिः छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे।।(मुण्डकोपनिषद् २/१/१८)

जब साधक समाधि में ईश्वर को जान लेता है, तब उसके अविद्यान्धकार की गांठ खुल जाती है, सभी संशयों का विनाश हो जाता है, मन-वाणी व शरीर के सभी अशुद्ध कर्मो पर विराम लग जाता है।

ऋषि दयानंद के जीवन की कुछ घटनायें देश व समाज की दुर्दशा को देख उनके दुखी होने के प्रमाण के रुप में प्रस्तुत की जाती हैं, पर मनीषियों की दृष्टि में उसे यथोचित समाधान की पूर्व अवस्था के रुप में मानना अधिक श्रेयस्कर है। अब हम प्रतिपाद्य विषय की ओर बढते हैं। योगदर्शन के अंतिम सूत्र में **÷स्वरुपप्रतिष्ठा'** शब्द का प्रयोग कैवल्य में जहाँ आत्मा को दुःखातीत सिद्ध करता है, वहीं महर्षि व्यास ने वेदांत दर्शन के ४/४/७ में **÷जगद्व्यापारवर्ज प्रकरणादसन्निहितत्वाच्च'** सूत्र से भी मुक्तात्माओं को समस्त सांसारिक गतिविधियों से मुक्त बताया है। पाठक बन्धु अन्यथा न लेवें अतः हम स्पष्ट करना चाहते हैं कि लेखक महोदय आर्यों के आचरण सुधारने की जो पावन प्रेरणा इस माध्यम से दे रहे हैं, उसे हमारा पूरा समर्थन है । आग्रह तो केवल मोक्ष में दुःखी होने को लेकर है। योगी व मुक्त दोनों इससे पृथक् रहते हैं ।

मुक्ति के बारे में कुछ मित्र एक अन्य प्रश्न और करते हैं कि क्या सभी मुक्त आत्माओं की योग्यता एक समान ही होती है या कुछ अंतर भी हो सकता है । इस बारे में २४ प्रकार की शक्तियों से ईश्वर के अनन्त विस्तृत स्वरुप में विचरण करते हुए अप्रतिम अद्वितीय आनन्द का भोग करने की जो बात ऋषि दयानंद जी ने लिखी है, विचारकों ने किसी उद्यान में लगे विभिन्न पुष्पों का अपनी २ योग्यतानुसार सुगंध लेने से उसकी तुलना की है । जैसे एक ही व्यक्ति चिकित्सक, संगीतकार, चित्रकार, लेखक, उपदेशक, याज्ञिक, नेता,

फेक्ट्रीचालक, पिता, रुपवान, बलवान, धनिक, चरित्रवान, निर्लोभी, शांत, धीर, गंभीर, मितभाषी, वेदमंत्र व्याख्याकार, संस्था संचालक, भवनस्वामी, कार चालक आदि सभी होता है, पर जो जिस दृष्टि या भावना से उस व्यक्ति से संपर्क करता है, वह उस-उस गुण, कर्म, स्वभाव व सम्बन्ध के कारण उस-उस अपेक्षा की पूर्ति कर देता है । ईश्वर के पास तो हर प्रकार का पारलौकिक आनन्द है। आत्मा मुक्ति में कितना व किस योग्यता से भोग करेगा, यह उसे देखना हैं। किराना की दूकान में घी, तेल, शक्कर, चाँवल आदि सब कुछ हैं । हम वो लेते हैं, जो हमें उपयुक्त लगता है । जैसे कोलकाता(पश्चिम बंगाल) की ÷सन्देश' नामक मिठाई जो उत्तर भारत की दूकानों में उपलब्ध नहीं होती है, उसको खाने में उपरान्त किसी को भी हम कैसे पूर्ण रुपेण केवल शब्दों से उसका स्वाद बता सकेंगें ? निश्चय ही मुक्ति का आनन्द व अवस्था को स्थूल रुप से ही बता सकते हैं । पूरी तरह तो मन वाणी आदि का सामर्थ्य ही नहीं है, जो स्पष्ट कर सके जैसा कि ब्रह्मवेत्ता ऋषि ने मैत्रायण्युपनिषद् ४/४ में कहा भी है-÷न शक्यते वर्णयितुं गिरा तदा स्वयन्तदन्त:करणेन गृह्यते।'

**- वेद सदन, तिवारी कॉलोनी,**
**होशंगाबाद (मध्यप्रदेश)**
**मो.९४२५४९५२४६**

**समाचार दर्पण**

## परली का बहुकुण्डीय यज्ञ सफल रहा

परली के कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता श्री जयकिशोरजी दोडिया व परिवार के सम्पूर्ण सहयोग से आर्य समाज परली जि.बीड में आयोजित ÷वेदज्ञान कथायज्ञ समारोह' काफी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। दि.२२ से २६ फरवरी के दौरान आयोजित इस कथा यज्ञ में अन्तर्राष्ट्रिय वैदिक प्रवक्ता श्री आनंदजी पुरुषार्थी ने अपनी प्रभावपूर्ण ओजस्वी वाणीद्वारा वेदमंत्रों की व्याख्या करते हुए श्रोताओं को प्रभावित किया। उन्होंने वैदिक संस्कृति, सामाजिक एवं आध्यात्मिक मूल्य, पारिवारिक सुख-शांति, जीवनलक्ष्य, वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था, ईश्वर का सत्य स्वरुप, भक्ति, उपासना आदि विषयों पर विद्वत्तापूर्ण विचार व्यक्त किये । उनके विचार सुनने के लिए नगर के श्रोता भारी संख्या में उपस्थित थे।अंतिम दिन बहुकुण्डीय यज्ञ अत्यधिक यशस्वी रहा, जिसमें लगभग १३६ यजमान दम्पतियोंने सहभाग लिया । आर्य भजनोपदेशक पं.अजय आर्य के मधुर भजन सुनकर श्रोतागण झूम उठे। दोडिया परिवार व आर्य समाज पदाधिकारियों ने काफी मेहनत उठाकर इस ऐतिहासिक समारोह को सफल बनाया।(विस्तृत समाचार मराठी विभाग में)

## औन्ध में श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

# डीएवी द्वारा राज्य के ६ विद्वानों का हुआ अभिनन्दन

पुणे के औन्ध परिसर में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के तत्त्वावधान में गत २२ व २३ दिसम्बर २०१६ को अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस विभिन्न कार्यक्रमों के साथ उत्साहपूर्वक मनाया गया। २३ को डी.ए.वी.प्रबन्धकर्त्री समिति के प्रधान श्री पूनमजी सूरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए एक विशाल समारोह में महाराष्ट्र के तपस्वी सन्यासी, वानप्रस्थी, विद्वान व पुरोहितों का सम्मान किया गया।

आरम्भ में ÷विशेष यज्ञ' सम्पन्न हुआ। तत्पश्चात् स्कूल के बच्चों का सांस्कृतिक कार्यक्रम व म.दयानंद पर लघुनाटिका प्रदर्शित की गयी। विशेष सम्मान समारोह में तपस्वी व्यक्तित्व, अनेकों छात्रों के निर्माता, प्रान्तीय सभा के संरक्षक पू.श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी (हरिश्चंद्र गुरुजी), यज्ञप्रचारक श्री सोममुनिजी, विद्वान लेखक डॉ.चन्द्रकान्तजी गर्जे, पुरोहित व उपदेशक पं.सुधाकर शास्त्री, लेखक डॉ.चन्द्रशेखर लोखण्डे, सभा के शुद्धि विभागप्रमुख संतोष आर्य आदियों का गौरव किया गया। इन महानुभावों को प्रत्येकी रु.११००/-, सन्मानपत्र, शाल व पुष्पहार प्रदान कर श्री पूनमजी सूरी के करकमलों से सम्मानित किया गया ।

इस अवसर पर अपने मार्गदर्शन में श्री सूरीजी ने स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्दजी के कार्यो पर प्रकाश डाला। डीएवी के कार्यविस्तार व संस्थान के माध्यम से शिक्षाप्रसार पर भी उन्होंने बल दिया । समारोह में महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा के मन्त्री माधवराव देशपांडे सहित पुणे की आर्य समाजों के पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता उपस्थित थे।

संस्थान के सदस्य श्री सत्पाल आर्य, डॉ.एस.के.शर्मा, श्री चावला, दयानन्द ब्राह्मण महाविद्यालय के प्राचार्य श्री प्रमोदजी आदि प्रमुखातिथि के रुप में उपस्थित थे ।

## रोजड में क्रियात्मक ध्यानयोग शिविर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन रोजड(गुजरात) के तत्त्वावधान में आगामी दि.२ से ९ अप्रैल २०१७ को ÷क्रियात्मक ध्यानयोग शिविर' का आयोजन हो रहा है। इस शिविर में योग के आठ अंगों के क्रियात्मक प्रशिक्षण के साथ ही ईश्वरप्राप्ति के लिए ध्यान, निदिध्यासन, आदर्श दिनचर्या, वैदिक सिद्धान्त आदि विषयों पर मार्गदर्शन होगा। शिविर में भाग लेने के इच्छुक साधकगण चलभाष क्र.९४२७०५९५५० पर सम्पर्क कर अधिक जानकारी प्राप्त करें ।

शोकसमाचार

# स्वतन्त्रता सेनानी श्री गायकवाड का निधन

गोवा स्वतन्त्रता आन्दोलन में सम्मिलित स्वाधीनता सैनिक एवं आर्य हिन्दी सत्याग्रह में शामिल आर्य सत्याग्रही तथा आर्य समाज औराद (ता.उमरगा) के निष्ठावान वरिष्ठ सदस्य श्री भुजंगरावजी कृष्णाजी गायकवाड का दि.३१ जनवरी २०१७ को प्रात: वृद्धावस्था के कारण दु:खद निधन हुआ । वे ८८ वर्ष के थे । अपने पश्चात् वे धर्मपत्नी श्रीमती सुगलाबाई, दो पुत्र एवं कन्याओं को छोड संसार से विदा हुए ।

श्री भुजंगरावजी प्रख्यात समाजसेवक एवं असंख्य विद्यार्थियों जीवननिर्माता पू.स्वामी श्रद्धानन्दजी(हरिश्चंद्र गुरुजी) के आरम्भिक शिष्यों में से एक थे। गुरुजी का सान्निध्य पाकर आप वैदिक धर्मी बनें । इन्हीं के साथ रहकर आपने गोवा स्वतन्त्रता संग्राम में उत्साहपूर्वक भाग लिया । पंजाब में जब हिन्दी पर पाबन्दी लगाई गयी, तब आर्य समाज द्वारा चलाये गये हिन्दी सत्याग्रह में आपने भाग लिया। गुरुजी(स्वामीजी) के साथ औराद से चल पडे १२ सत्याग्रहियों के जत्थें में आप भी एक थे। उस समय आपको सवा महिने तक का कारावास भी भुगतना पडा।

श्री गायकवाड आर्य वैदिक सिद्धान्तों के कर्मठ अनुयायी व एक मेहनती किसान थे । अनवरत श्रमसाधना से उन्होंने अपनी सन्तानों को उच्चविद्याविभूषित, सभ्य व सुसंस्कृत नागरिक बनाया। आप आर्य समाज औराद के सेवाभावी सदस्य रहें । सार्वजनिक जीवन में आपको एक आदर्श व्यक्तित्त्व के रुप में पहचाना जाता था। सामाजिक, धार्मिक तथा परोपकार के कार्य में आपका सदैव सक्रिय सहभाग रहा है। आर्य समाज औराद के नवनिर्माण तथा प्रचार-प्रसारादि विभिन्न कार्यों में भी आप आगे रहे । कुछ समय तक आप स्थानीय ग्रामपंचायत के भी सदस्य रहे। अपने मधुर मिलनसार व्यवहार से सभी के हृदय में उन्होंने विशेष स्थान पाया था ।

स्व.श्री भुजंगरावजी के पार्थिव पर दोपहर अनेकों मान्यवरों की उपस्थिति में अन्तिम संस्कार किये गये । इस अवसर पर आर्य समाज औराद के पदाधिकारी एवं शासन की ओर से अधिकारी उपस्थित थे।

**दिवंगत आत्मा को प्रान्तीय सभा की ओर से भावपूर्ण श्रद्धान्जलि व विनम्र अभिवादन ×**

।।ओ३म्।।

**माझा मराठाची बोलु कवतिके । परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।**
**ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ।।** (संत ज्ञानेश्वर)

# मराठी विभाग

**उपनिषद संदेश**

## ज्ञानीजन मोक्षाचे अधिकारी

**पराच: कामाननुयन्ति बालास्ते मुत्योर्यन्ति विततस्य पाशम् ।**
**अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते।।** (कठोपनिषद-४/२)

जे अज्ञानी लोक बाह्य विषयांमागे धावत सुटतात, ते मृत्यूच्या पसरलेल्या जाळ्यात फसतात. पण ज्ञानी लोक मात्र निश्चितच मोक्षालाच जाणून जगाच्या अनित्य पदार्थांमध्ये सुखाची अपेक्षा ठेवत नाहीत.

---

**दयानंद वाणी**

## न्यायदाता परमेश्वर ×

आता असे पाहा × जो कोणी पाषाणादिकांच्या मूर्तीवर श्रद्धा न ठेवता सर्वदा सर्वव्यापक, सर्वातर्यामी, न्ययकारी परमात्मा सर्वत्र आहे असे जाणो व मानतो तो हहे ओळखतो की, परमेश्वर सगळ्यांची बरी-वाईट कृत्ये सदैव पाहत असतो आणि एक क्षणही आपण परमात्म्यापासून वेगळे राहहू शकत नाहही. म्हणून कुकर्म करण्याचे गोष्ट तर दूरच राहिली, तसे काही करण्याचा वाईट विचारही तो मनात आणू शकत नाही. त्याला हे माहीत असते की, जर मी मनाने अथवा वाणीनेही काही वाईट कृत्य करीन तर त्या सर्वातर्यामी परमेश्वराच्या न्यायानुसार मला शिक्षा झाल्याखेरीज राहणार नाही. शिवाय केवळ नामस्मरणाने काहीही फळ मिळत नसते. नुसते तोंडार साखर, साखर असे म्हटल्याने तोंड गोड होत नाही किंवा कडुलिंबाचा जप केल्याने तोंड कडू होत नाही. प्रत्यक्ष जिभेने चाखल्यावरच गोडवा किंवा कडूपणा लक्षात येतो.

**(सत्यार्थप्रकाश-११ वा समुल्लास)**

# शिवजयंती निमित्त

## आर्य(हिन्दवी) स्वराज्याचे संस्थापक

# छत्रपती शिवाजी महाराजांना

## आर्यजनांचा मानाचा मुजरा...×

## क्रांतिवीरांना शतशः नमन ×

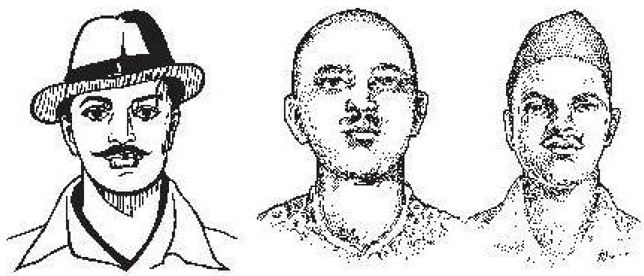

## दिव्यत्वाची जेथ प्रचिती, तेथे कर माझे जुळती ××

**÷दिल से निकलेगी**
**न मरकर भी वतन की उल्फत,**
**मेरी मिट्टी से भी**
**खुशबू–ए–वतन आयेगी।'**

ही भावना जुलमी इंग्रजी सत्तेविरुद्ध झुंजलेल्या सर्वच क्रांतिकारकांची होती. अशाच ध्येयाने फासावर गेलेल्या भारतमातेच्या तीन नरवीरांचा, भगतसिंग–सुखदेव–राजगुरु यांचा दि.२३ मार्च २०१७ रोजी स्मृतिदिन×

सायमन कमिशनविरोधी लोकक्षोम आटोक्यात आणतांना स्कॉट आणि सॉंडर्स या इंग्रज अधिकाऱ्यांकडून लाला लाजपतराय यांना मारहाण झाली. त्यातच त्यांचे निधन झाले. याचा सूड म्हणून भगतसिंग, राजगुरु आणि सुखदेव यांनी सॉंडर्स वधाचा कट रचला. राजगुरुकडून सॉंडर्स मारला गेला. सॉंडर्स वध खटल्यात या तिघांना फाशी झाली. दि.२३ मार्च १९३१ रोजी लाहोरच्या कारागृहात तिघे वीर फासावर गेले.÷**मेरा रंग दे वसंती चोला। इसी रंग में शिवा ने माँ का बंधन खोला। यही रंग हल्दीघाटी में खुल करके था खेला। नव वसंत में भारत के हितवीरों का यह मेला।'** हे गीत गातच या क्रांतिकारकांनी भारतमातेच्या स्वातंत्र्ययज्ञात आपले प्राण आहुत केले. त्या थोर क्रांतिसिंहांना आर्यजनांचे शतशः विनम्र अभिवादन ×

# शहीद भगतसिंहांवर आर्य समाजाचा प्रभाव

**-प्राचार्य देवदत्त तुंगार**

महान क्रांतिकारी देशभक्त सरदार भगतसिंह हे पंजाबमधील एका शीख परिवाराचे सदस्य होते. त्यांचे आजोबा, काका आणि वडील निष्ठावान आर्यसमाजी होते. स्वामी दयानंद सरस्वती आणि आर्यसमाजी चळवळी यांचा पंजाबमध्ये असंख्य कुटूंबावर प्रभाव होता. प्रखर देशभक्ती आणि कृतिशील सामाजिक सुधारणा हे आर्यसमाजी चळवळीचे वैशिष्ट्य. त्यामुळे बालपणापासूनच भगतसिंहावर राष्ट्रभक्ती आणि समाज परिवर्तनकारी विचारधारा यांचा प्रभाव होता. हा प्रभाव शेवटपर्यंत राहिला. तरुणपणी तत्कालीन परिस्थितीच्या प्रभावाने व स्वत:च्या चिंतनाने भगतसिंह समाजवादाकडे वळले. आर्यसमाजाच्या माध्यमातूनच ते ÷हिंदुस्थान सोशालिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' संस्थेकडे वळले.

पत्रकारितेच्या क्षेत्रात भगतसिंह आर्यसमाजी नेत्यांच्या सहकार्यामुळेच आपले अंगभूत कर्तृत्व गाजवू शकले. स्वामी दयानंदांनंतर आर्यसमाजाचे सर्वश्रेष्ठ नेते म्हणजे स्वामी श्रद्धानंद(लाला मुंशीराम) यांचे सुपुत्र पंडित इंद्र विद्यावाचस्पती यांनीच ÷अर्जुन' नामक हिंदी दैनिकात संपादकीय काम करण्याची संधी भगतसिंह यांना सन १९२३ साली दिली. त्यांनी ÷अर्जुन' दैनिकात लक्षणीय कामगिरी बजावली. स्पष्ट आणि ठाम विचार, साधी आणि प्रभावी व वाचकांच्या हृदयाला थेट भिडणारी लेखनशैली, पुरोगामी विचार आणि दलित, वंचित समाज घटकांच्या व्यथा-वेदनांना वाचा फोडण्याची तळमळ ही भगतसिंह यांच्या पत्रकारितेची खास वैशिष्ट्ये होती. सुमारे अडीच-तीन वर्षे त्यांनी दै.अर्जुन मध्ये संपादनकार्य केले. पंजाबमधून गुरुमुखी लिपीत निघणाऱ्या ÷कीर्ती' नियतकालिकातही त्यांनी काम केले. कानपूर येथील श्री गणेश शंकर विद्यार्थी यांचे नाव भारताच्या स्वातंत्र्य लढ्यात सुवर्णाक्षरांनी नोंदले गेले आहे. गणेश शंकर विद्यार्थी हे कानपूर (उत्तरप्रदेश) येथून ÷प्रताप' वृत्तपत्र चालवित होते. या वृत्तपत्राला भारताच्या पत्रजगात अनोखे स्थान होते. प्रताप च्या संपादकीय विभागात भगतसिंह यांनी काही काळ काम केले. पण त्यांच्या क्रांतिकार्याची चौकशी पोलिस खात्यात सुरु झाली. गुप्तचर यंत्रणेची आपल्यावर पाळत आहे हे लक्षात येताच कानपूरहून भगतसिंह दिल्लीकडे गेले. भगतसिंह यांनी ÷बलवंतसिंह' या टोपण नावाने ÷प्रताप' मध्ये क्रांतिकारक

लिखाण केले आहे. ÷अर्जुन' या हिंदी दैनिकाची ÷सत्यवादी' नामक साप्ताहिक पुरवणी निघत असे. त्यांचे संपादन भगतसिंह हेच करीत असत. बलवंतसिंह, अर्जुनसिंह आणि विद्रोही इत्यादी टोपण नावांनी भगतसिंह यांनी क्रांतिकारक लिखाण केले आहे.

हुतात्मा भगतसिंह यांना महाराष्ट्राबद्दल व मराठी क्रांतिकारकांबद्दल विशेष आत्मीयता होती. छत्रपती शिवाजी महाराज हे त्यांचे आराध्यदैवत होते. १९२४ साली त्यांनी कुलाबा जिल्ह्यातील रायगड या किल्ल्यास भेट दिली. शिवाजी महाराजांच्या वास्तव्याने पुनीत झालेल्या या गडाचे त्यांनी मुद्दाम दर्शन घेतले. लोकमान्य टिळक हे ही भगतसिंहाचे श्रद्धास्थान होते. त्यांचा जगभर गाजेला ÷गीता रहस्य' ग्रंथ तुरुंगवासाच्या काळात त्यांनी मुद्दाम वाचला होता. स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर यांच्या क्रांतिकार्याने भगतसिंह खूपच प्रभावित झाले होते. सावरकर लिखित ÷१८५७ चे पहिले स्वातंत्र्यसमर' हा जगभर गाजलेला ग्रंथ त्यांचा फार आवडता ग्रंथराज होता. भगतसिंह यांनी सावकारांच्या या इंग्रजी ग्रंथाची अनेक पारायणे केली व ग्रंथ छापून आपल्या सहकारी क्रांतिकारकांना प्रेरणादायी पुस्तक म्हणून भेट दिला.

भगतसिंह यांचे कुटूंब देशभक्त आर्य कुटूंब होते. त्यांचे वडील किशनसिंह आणि काका स्वर्णसिंह यांनी काँग्रेसने छेडलेल्या वंगभंग चळवळीत उत्साहाने व निर्धाराने भाग घेतला होता. प्रसिद्ध आर्य समाजी विचारवंत आणि नेते पंडित लोकनाथ तर्क वाचस्पती यांनी लाहोर येथे १९१५ साली भगतसिंह यांचा वेदोक्त पद्धतीने यज्ञोपवित संस्कार (गळ्यात जानवे घालणे) केला होता. भाई परमानंद यांचे शिष्योत्तम भगतसिंह यांच्याबरोबर गुरुकुल कांगडीचे जयचंद्र विद्यालंकार हेही त्यांचे आदरणीय नेते होते. शीख आणि आर्यसमाज या दोन्ही विचारसरणींचा त्यांच्यावर खोल प्रभाव होता.

## लातूरचा वार्षिकोत्सव १४, १५ व १६ मार्च ला

लातूर येथील गांधी चौक आर्य समाजाचा ८२ वा वार्षिक उत्सव येत्या १४, १५ व १६ मार्च २०१७ रोजी विविध प्रबोधनपर कार्यक्रमांनी संपन्न होत आहे. यासाठी बिजनौर (उ.प्र.)येथील वैदिक विचारवंत पं.मोहितजी शास्त्री व सोलापुरचे मराठी भाषी आर्य विद्वान पं.राजवीरजी शास्त्री यांना भजन व व्याख्यानासाठी आमंत्रित करण्यात आले आहे. दररोज स.७.३० ते १०.३० पर्यंत वेदपरायण यज्ञ, भजन, प्रवचन तर रात्रौ ८ ते १० या वेळात भजनसंगीत व राष्ट्रीय, सामाजिक व वैश्विक विषयांवर व्याख्याने होणार आहेत. तरी श्रोत्यांनी बहुसंख्येन उपस्थित राहावे, असे आवाहन लातूरच्या गांधी चौक, आर्य समाजातर्फे करण्यात आले आहे.

# आर्य समाज आणि महाराष्ट्र

महाराष्ट्र ही सुधारकांची काशी होती. पुरोगामी विचारांचे वारे येथे वाहत होते. आपल्या कार्यास येथून चालना मिळेल, असे पाहून महर्षी दयानंद सरस्वतींनी गुढीपाडवा, ७ एप्रिल १८७५ रोजी, काकडवाडी, मुंबई येथे आर्य समाजाची स्थापना केली. महर्षींच्या विचारांचा प्रभाव महाराष्ट्रातील तत्कालीन सुधारकांवर पडला. त्यात लोकहितवादी गोपाळ हरि देशमुख व न्या.महादेव गोविंद रानडे हे प्रमुख होते. या सुधारकांच्या सामाजिक विद्रोहाचा प्रतिकूल परिणाम त्यांच्या कौटुंबिक जीवनावर होण्याची शक्यता निर्माण होऊ लागताच त्यांच्या आक्रमतेला मवाळ स्वरुप येत गेले. कुटूंबवत्सलतेमुळे प्रगतशील सुधारणवादी विचार मांडून त्यांचा पाठपुरावा करण्याचे सामर्थ्य त्यांच्यामध्ये नव्हते. त्यामुळे स्त्री-शुद्रांच्या समानतेबद्दल पोटतिडकीने विचार मांडणाऱ्या व मूर्तीपूजा, अवतारवाद, अनावश्यक कर्मकांड, बालविवाह यांबद्दल सडेतोड विचार मांडणाऱ्या महर्षी दयानंदांचे त्यांना आकर्षण वाटू लागले. न्या.रानडेंच्या निमंत्रणावरुन स्वामीजी २० जून १८७५ रोजी पुण्यात आले. तांबड्या जोगेश्वरीजवळ भिडेवाड्यात त्यांची १५ व्याख्याने झाली. पुण्यात त्यांची जवळपास पन्नास व्याख्याने झाली.

ही व्याख्याने फारच प्रभावशाली ठरली. पुण्यातील सुधारकांनी स्वामीजींची हत्तीवरुन मिरवणूक काढली. या मिरवणुकीचे सुंदर वर्णन न्या.रानडेंच्या पत्नी रमाबाई रानडे यांनी **÷आमच्या आयुष्यातील काही आठवणी'** या आत्मचरित्रात केले आहे. पुराणपंथी लोकांचा या मिरवणुकीस विरोध असल्याने स्वामीजींच्या संरक्षणाकरिता म.फुले आपल्या सहकाऱ्यांसह या मिरवणुकीत सहभागी झाले.

लोकहितवादींवर स्वामीजींचा पूर्ण प्रभाव पडला होता. ते मुंबई आर्यसमाजाचे विश्वस्त व अध्यक्ष झाले. महर्षींनी आपल्या मृत्युपत्राद्वारे निर्माण केलेल्या परोपकारिणी सभेचे लोकहितवादी व न्या.रानडे हे विश्वस्त होते. प्रार्थनासमाज आर्यसमाजात विलीन करण्याचा प्रयत्न या काळात झाला होता. नंतरच्या काळातील महाराष्ट्रातील सुधारकांमध्ये कोल्हापूरच्या राजर्षी शाहु महाराजांचे नाव घेतले जाते. वेदांची दारे सर्वांसाठी खुली करुन, समानतेची वागणूक देणारा आर्यसमाज त्यांना सत्यशोधक समाजापेक्षा जवळचा वाटत होता. आपल्या शिक्षण संस्था त्यांनी आर्यसमाजाकडे सुपुर्द केल्या. स्वामीजींच्या काळात व नंतर जवळजवळ सर्व मराठवाड्यात आर्यसमाजाच्या शाखा निर्माण झाल्या. निजामाविरुद्ध झालेल्या अभूतपूर्व नि:शस्त्र आर्य सत्याग्रहांद्वारे आर्यसमाजाची ओळख घराघरात पोहचली.

# निमंत्रण-ज्येष्ठ आर्यसेवकांच्या गौरव समारंभाचे

## शिक्षणतज्ज्ञ डॉ.वाघमारेंसह विद्वान, लेखक व पुरोहितांचा समावेश

महर्षी दयानंद प्रतिपादित वैदिक विचारसरणी अंगिकारुन आर्य समाजाच्या प्रचार व प्रसार कार्यात योगदान देणाऱ्या व तसेच या आदर्श विचारांच्या माध्यमाने सामाजिक, शैक्षणिक आणि राष्ट्रीय कार्यात बहुमोल कामगिरी बजावणाऱ्या महाराष्ट्रातील जवळपास १५ मान्यवरांचा महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे गौरव करण्यात येणार आहे.

येत्या बुधवार दि.१५ मार्च २०१७ रोजी गांधी चौक, लातूर येथील आर्य समाजाच्या वार्षिकोत्सवादरम्यान दु.२ ते ५ वा. दरम्यान हा भव्य सत्कार समारंभ होत आहे. प्रांतीय सभेचे संरक्षक व थोर समाजसेवक स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती यांच्या हस्ते हा गौरव होत असून प्रमुख पाहुणे वैदिक विद्वान पं.मोहितजी शास्त्री, पं.राजवीरजी शास्त्री तसेच अन्य प्रतिष्ठित मान्यवर यावेळी उपस्थित राहणार आहेत.

### डॉ.जे.एम.वाघमारे यांचा गौरव

या कार्यक्रमात महर्षी दयानंदांच्या विचार व कार्याने प्रभावित होऊन शैक्षणिक व सामाजिक क्षेत्रात भरीव योगदान देणारे प्रसिद्ध विचारवंत, माजी कुलगुरु व माजी खासदार डॉ.जनार्दनरावजी वाघमारे यांचा जाहीर सत्कार सभेतर्फे केला जाणार आहे. डॉ.वाघमारे हे विद्यार्थीदशेपासून आर्य समाजाच्या सान्निध्यात आले. आर्य क्रांतिकारी नेते पं.नरेंद्रजी यांना गुरुस्थानी मानून त्यांनी सुधारणात्मक विचारांचा अंगिकार केला. जीवनभर सत्यव्रताचे पालन करीत समाजाला नवी दिशा दिली. स्वत:चा व मुला-मुलींचा आंतरजातीय विवाह करुन जातपातविरहित समाजरचनेला प्रोत्साहन दिले. प्राचार्य, कुलगुरु, नगराध्यक्ष व राज्यसभेचे सदस्य आदी पदांवर राहुन पारदर्शक स्वरुपात शैक्षणिक, सामाजिक व प्रशासनिक सेवा दिली आहे. तसेच एक अभ्यासू शिक्षणतज्ज्ञ म्हणून ते आपल्या लेखनी व वाणीच्या माध्यमाने संबंध महाराष्ट्राचे प्रबोधन करतात.

डॉ.वाघमारे यांच्या बरोबरच आर्य समाज वैदिक विचार व संस्कारांची ज्यांच्यावर मोठ्या प्रमाणात छाप आहे व ज्यांनी आपल्या लेखनीने व्यापक स्वरुपात साहित्य निर्मिती केली आहे आणि शिक्षण क्षेत्रात प्राचार्य, प्राध्यापक, शिक्षक आदी पदांवर राहुन प्रेरक कार्य केले आहे. अशाही महनीय व्यक्तींचा गौरव केला जाणार आहे. ज्यांचा गौरव होणार आहे, अशा गौरवमूर्तींमध्ये खालील मान्यवरांचा समावेश आहे.

१) प्राचार्य वेदमुनिजी वेदालंकार (धाराशिव)-प्रसिद्ध अनुवादक, लेखक व वेदप्रचारक

२) प्राचार्य गोविंदराव मैंदरकर (धाराशिव)- प्रसिद्ध अनुवादक व लेखक

३) प्राचार्य देवदत्त तुंगार (नांदेड)- ज्येष्ठ पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ते

४) प्राचार्य डॉ.चंद्रकांत गर्जे (पुणे) - प्रसिद्ध लेखक व अनुवादक

५) पं.ज्ञानकुमार आर्य (लातूर) - संस्कृत मराठी अभ्यासक, लेखक, संपादक, वेदप्रचारक

६) सौ.सवितादेवी बळवंतराव जोशी (संभाजीनगर)-वैदिक साहित्य अनुवादिका

## दिवंगत विद्वानांचा स्मृती गौरव

स्वामी दयानंदांचे सिद्धांत अनुसरुन शिक्षण व साहित्य क्षेत्रात मौलिक कार्य केलेल्या कांही दिवंगत आर्य विद्वानांचा स्मृतिगौरव ही याच कार्यक्रमात होईल. अशा दिवंगत आर्य विभूतींमध्ये खालील मान्यवरांचा समावेश आहे.

१) डॉ.चंद्रभानुजी सोनवणे (लातूर)- प्रख्यात हिंदी - संस्कृत अभ्यासक व भाषातज्ज्ञ

२) डॉ.कुशलदेवजी शास्त्री (नांदेड)- म.दयानंद चरित्राभ्यासक, इतिहासतज्ज्ञ, संशोधक व संपादक

३) मु.अ.दिगंबरराव होळीकर (उदगीर)- समर्पित मुख्याध्यापक(प्रशासक) व कृतिशील समाजसेवक

## गुरुकुल स्नातिकांचा गौरव

स्वातंत्र्यपूर्व काळात मुलींसाठी शिक्षणाबाबत उदात्त दृष्टिकोन नसतांना व तत्कालीन प्रतिकूल परिस्थितीत ही माता-पित्यांनी आपल्या मुलींना प्राचीन वैदिक वाङ्मय, संस्कृत व व्याकरण शिकण्यासाठी गुरुकुलास पाठविले. त्यात मराठवाड्यातील कांही महिलांना हे शिक्षण घेण्याची संधी मिळाली. त्या आर्य महिलांनी वैदिक विचारांना जीवनात उतरवून कौटुंबिक व सामाजिक कार्यात मोलाची भूमिका बजावली. अशा कांही कन्या गुरुकुल स्नातिकांचा ही सभेतर्फे सत्कार केला जात आहे. त्यातील कांहीजण दिवंगत झाल्या आहेत. सत्कारमूर्ती महिला पुढीलप्रमाणे-

१) श्रीमती मीरा चंद्रभानुजी सोनवणे

२) श्रीमती सुभद्राबाई दिगंबरराव होळीकर

३) स्व.सौ.सुलोचनादेवी जनार्दनराव वाघमारे

४) स्व.श्रीमती सुशीलादेवी निवृत्तीराव होळीकर

## स्वा.सै.स्व.होळीकरांचा स्मृति गौरव

मराठवाड्यातील प्रसिद्ध आर्य स्वा.सै.दिवंगत वासुदेवराव हनुमंतराव होळीकर यांनी सामाजिक, राष्ट्रीय व ग्रामविकासासाठी दिलेल्या महत्वपूर्ण योगदानाबद्दल त्यांचा स्मृती गौरव याच कार्यक्रमात करण्याचे निश्चित झाले आहे. औसा तालुक्यातील होळी व कवठा गावाचे

वतनदार तर पानचिंचोलीच्या शैक्षणिक व सामाजिक कार्याला वाहुन घेणारे स्व. होळीकर हे सामाजिक समतेचे पुरस्कर्ते होते.

## गोविंदराव बंडेवारांचा सत्कार

तामसा (जि.नांदेड) येथील आर्य समाजाचे अध्वर्यू, धडाडीचे कार्यकर्ते व प्रसिद्ध व्यापारी श्री गोविंदराव उर्फ बाबुरावजी बंडेवार यांनी आर्य समाजाच्या भवननिर्माण व आर्य सामाजिक विकास कार्यात दिलेल्या योगदानाबद्दल त्यांचाही सत्कार करण्यात येणार आहे. तरी या कार्यक्रमास राज्यातील आर्य जनतेने, सत्कारमूर्तींच्या नातेवाईक व मित्रजनांनी मोठ्या संख्येने उपस्थित राहावे,असे आवाहन महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनी, मंत्री माधवराव देशपांडे, कोषाध्यक्ष उग्रसेन राठौर, संयोजक प्रा.ओमप्रकाश होळीकर (विद्यालंकार) सभेच्या पदाधिकाऱ्यांनी केले आहे.

## ✻ सभेचे मानवकल्याणकारी उपक्रम ✻

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

८२व्या वार्षिकोत्सवानिमित्त विशेष-

# प्रेरणेचा दीपस्तंभ-÷आर्य समाज, लातूर'

**प्रेषक-ओमप्रकाश पाराशर(उपप्रधान)**

आर्य समाज, गांधी चौक लातूरचा ८२ वा वार्षिकोत्सव दि.१४, १५ व १६ मार्च २०१७ रोजी उत्साहाने संपन्न होत आहे. त्यानिमित्त या संस्थेच्या ऐतिहासिक कार्याचा परिचय करुन देणारा १२ वर्षापूर्वी लिहिलेला लेख वाचकांसाठी देत आहोत. मूळ लेखात लेखकाचा उल्लेख नाही. – **संपादक**

लातूर आर्य समाज केवळ मराठवाड्यातीलच नव्हे तर महाराष्ट्रातील आर्य समाजासाठी ÷दीपस्तंभ' म्हणून भूमिका निभावतो. आर्य समाज लातूरच्या सर्व कार्यक्रमांना जिज्ञासू श्रोत्यांची उपस्थिती पाहून संपूर्ण भारतातील आर्य विद्वान उपदेशक या समाजाकडे आकर्षित होतात.

### * लातूर आर्य समाजाची स्थापना

भाई श्यामलालजी, भाई बन्सीलालजी व पं.मंगलदेवजी शास्त्री यांच्या प्रेरणेने सन १९३२ मध्ये आर्य समाज लातूरची स्थापना झाली. सर्वप्रथम श्री लक्ष्मीनारायणजी बाजपाई प्रधान, दिगंबरराव शिवणगीकर मंत्री व प्रारंभीक सदस्य श्री किशनराव सौताडेकर, दिगंबरराव धर्माधिकारी, विरसंगप्पा मास्तर, भृगुरामजी चामले इत्यादी कार्यरत होते. सदरील आर्य समाज लातूरच्या मध्यवर्ती ठिकाणी औसा हनुमान मंदिराजवळ असून या वास्तूचे नूतनीकरण सन १९९० साली श्री उत्तममुनिजींच्या शुभहस्ते सुरु झाले. या इमारतीत आठ खोल्या व दोन हॉल असून ॲड.हरिश्चंद्र पाटील रेड्डी परिवारातर्फे मोठा हॉल मातोश्री प्रमिलादेवी सभागृह या नावाने समर्पित झाला. त्याचे उद्घाटन दि.२९ ऑगस्ट २००५ रोजी श्री डॉ.भवानीलालजी भारतीय यांच्या शुभहस्ते संपन्न झाले.

### शैक्षणिक क्षेत्रातील उल्लेखनीय कार्य

इ.स. १९३५ साली भाई श्यामलालजींनी लातूरच्या तीन मुलांना गुरुकुल सिकंदराबाद (पंजाब) येथे संस्कृत शिक्षणासाठी पाठविले. तेंव्हापासून या परिसरातील मुला-मुलींना संस्कृत व वैदिक संस्कृतीच्या विशेष अध्ययनाकरिता गुरुकुलात पाठवण्यास सुरुवात झाली. या परिसरातील गुरुकुलात विशेष शिक्षण घेतलेल्या स्नातक व स्नातिका यांची संख्या शंभरपेक्षा जास्त होईल.

लातूर परिसरातील सर्व प्रथम स्थापन झालेल्या महाविद्यालयास आर्य समाजाचे संस्थापक महर्षी दयानंद सरस्वती यांचे नाव

दिले गेले. यावरुनच हे आर्य समाजाची शिक्षण क्षेत्रात असणारी रुची सिद्ध होते. लातूर विभागात असणाऱ्या विद्यालयात संस्कृत अध्ययन व अध्यापन याबाबत जी विशेष जागरुकता दिसते, त्या मागे देखील आर्य समाजाची प्रेरणा आहे. मागील तीस ते पस्तीस वर्षापासून या आर्य समाजात ÷दयानंद शिशु विहार' या नावाने एक बालक मंदिर चालू आहे. मराठी साहित्य प्रकाशनामध्ये देखील या आर्य समाजाने वेळोवेळी रुची दाखवली आहे. या संबंधीत पू.उत्तममुनिजी (डॉ.डी.आर.दास)यांनी लिहिलेले आर्य संस्कृतीचे मूलभूत विचार व मराठी जनज्ञान इ.मासिकाच्या प्रकाशनामध्ये आर्य समाज लातूरचा सर्वोपरी सहभाग होता. आर्य समाज लातूरच्या शैक्षणिक कार्यांतर्गत विद्यार्थ्यांना आपल्या वास्तूचा उपयोग इथे राहून अभ्यास करण्यासाठी करुन दिला. याचा लाभ घेणाऱ्यांमधून अनेक विद्यार्थी आज रोजी शैक्षणिक, राजकीय व इतर अनेक क्षेत्रात मोठ्या हुद्यांवर कार्यरत आहेत.

## हैदराबाद मुक्ती संग्रामातील अविस्मरणीय योगदान

निजामाच्या निरंकुश व जुलमी राजवटी विरुद्ध जनसामान्यांना संघटित करण्याचे साहसी कार्य आर्य समाज लातूर ने सुरु केले. १९३७ साली लातूरच्या जैनांच्या धार्मिक मिरवणुकीला रजाकारांनी केलेला विरोध शेकडो आर्य समाजी लोकांच्या सहयोगाने मोडून महावीर स्वामींची मिरवणुक काढण्यात आली. या प्रसंगी अनेक आर्य समाजी लोकांवर खटले भरले व त्यांना कारावासात सजा दिली. याच वेळेपासून लातूरात सर्वप्रथम निजामाच्या विरुद्ध सत्याग्रहाची सुरुवात झाली. या सुमारास कारावास जात असतांना अनेक आर्य समाजी लोकांनी आपल्या सोबत हवनकुंड नेले. त्यावेळी असलेल्या सरकारला विवश होऊन जेलमध्ये दैनिक हवन करण्याची परवानगी द्यावी लागली. त्याच वर्षी लातूर आर्य समाजाचे एक प्रमुख कार्यकर्ते निवृत्तीराम गोजमगुंडे यांच्यावर रजाकारांनी तीक्ष्ण हत्याराने हल्ला करुन जखमी केले. १९३८-३९ च्या हैद्राबाद सत्याग्रहात आर्य समाज लातूरचे श्री दिगंबररावजी शिवणगीकर यांना आर्य रक्षा समिती हैद्राबादच्या वतीने विशिष्ट सत्याग्रहाचे नेतृत्व करण्याचे श्रेय प्राप्त झाले. हैद्राबाद सत्याग्रहात सहभाग घेण्याकरिता अनेक सत्याग्रहींना पाठविण्याचे श्रेय आर्य समाज लातूरकडे जाते. हैद्राबाद मुक्ती संग्रामात देखील लातूरने एक हुतात्मा दिला आहे. परंतु इतिहासात या नावाची चर्चा नाही. ते नाव म्हणजे ÷हुतात्मा माधवराव सदाशिवराव'× १९३८-३९ च्या हैद्राबाद सत्याग्रहात गुलबर्गा जेलमध्ये निजाम सरकारच्या अमानुष वागणुकीमुळे २६ मे १९३९ ला माधवराव शहीद झाले.

सन १९४२ मध्ये निजामाच्या जन्म दिवसानिमित्ताने गंजगोलाई मध्ये निजामाचा जो झेंडा लावला होता. त्या झेंड्यास ४० फुट उंचीवरुन काढुन टाकुन त्या जागी तिरंगा झेंडा लावण्यात आला. हे साहसी कार्य लातूर आर्य समाजाचे सर्वश्री रघुवीर शिंदे, काशीनाथ भोई, अनंत राजाराम जैन, गुरुसंग स्वामी व करबसप्पा इंडे या पाच आर्य युवकांनी आपले शीर तळहातावर घेऊन केले. या कारणामुळे त्यांना पाच वर्षांची कारावसाची सजा झाली.

लातूरच्याच कासिम रजवीच्या रजाकार हस्तकांनी जनतेवर जो अत्याचार चालवला होता. आर्यवीरांनी त्याचा मोठ्या बहादुरीने मुकाबला केला. आर्य समाजाच्या उदारमतवादी तत्त्वज्ञानामुळे प्रभावित होऊन अनेक दलित बंधुंनी देखील आर्य समाजाची प्रेरणा घेऊन हैद्राबाद सत्याग्रह व मुक्ती संग्रामामध्ये आपले योगदान दिले.

१९४७-४८ च्या सशस्त्र हैद्राबाद मुक्ती संग्रामामध्ये विशेष करुन येडशी, वागदरी, चिंचोली, कँपमध्ये मुख्यत्वे करुन आर्य समाज लातूरचे श्री रामचंद्रजी मंत्री, श्री चंद्रशेखरजी बाजपाई यांचे कार्य उल्लेखनीय आहे. रामचंद्रजी मंत्री चिंचोली कँप चे प्रमुख संचालक होते. त्यांचे खरे नाव ÷रामचंद्रजी महिंद्रकर' होते. परंतु ते त्या वेळेस लातूर आर्य समाजचे मंत्री असल्यामुळे ते पुढे रामचंद्रजी मंत्री या नावानेच प्रसिद्ध झाले. या सशस्त्र कँपमधील सैनिकांनी ६५ गावांना मुक्त करुन १५ ऑगस्ट १९४८ ला याचे नामकरण **÷मुक्तापुर स्वराज्य'** असे केले. मुक्तापुर स्वराज्याचे विधिवत मंत्रीमंडळ तयार झाले. त्यामध्ये आर्य समाज लातूरचे आर्यवीर श्री रामचंद्रजी मंत्री हे संरक्षण मंत्री व श्री चंद्रशेखरजी बाजपेयी हे पोलीस मंत्री या रुपात सामील झाले होते. निलंगा येथील सुप्रसिद्ध आर्यनेते श्री शेषरावजी वाघमारे देखील या मंत्रीमंडळात सामील होते. तत्कालीन काँग्रेसचे अध्यक्ष स्वामी रामानंदजी तीर्थ यांनी **÷आर्य समाजाने हैद्राबाद स्टेट मध्ये स्टेट काँग्रेससाठी अनुकुल पृष्ठभूमी तयार केली आहे'** असे गौरवोद्‌गार काढले होते. त्याचप्रमाणे ÷आर्य समाजाने काँग्रेसला अनेक कार्यकर्ते दिले. त्यामुळे हैद्राबाद स्वतंत्र होण्यास त्यांचा हातभार लागला. आर्य समाज लातूरच्या या विविध कार्यामुळे लातूर परिसरातील जनतेचे मनोधैर्य व आत्मबल वाढण्यास मदत झाली,' असेही ते म्हणाले होते.

### नवयुवकांचे आकर्षण केंद्र

राष्ट्रीय जागरण, समाज उत्थान इत्यादी कार्यात आर्य समाजाच्या विशेष आस्थेमुळे वेळोवेळी युवा वर्ग आर्य समाजाकडे आकर्षित होत आहेत. आर्यवीर दल, योगासन, प्राणायाम, व्यायामशाला इत्यादी शिबिरे, स्वास्थ्य रक्षा व प्राकृतिक चिकित्सा

शिबिर यासारख्या कार्यामुळे लातूर आर्य समाजाचे कार्य आजसुध्दा उल्लेखनीय आहे. आर्य समाजाच्या विविध अखिल भारतीय आंदोलनात उदा.पंजाबमधील हिंदी रक्षा व गोरक्षा आंदोलनात आर्य समाज लातूरच्या एकनाथराव गायकवाड व किसनराव हलवाई अशा अनेक कार्यकर्त्यांनी उत्साहाने भाग घेतला होता.

**विविध समारंभांच्या माध्यमातून जनजागरण**

वार्षिकोत्सव, विशेष अधिवेशने व श्रावणी वेद प्रचाराच्या माध्यमाद्वारे अखिल भारतीय विद्वानांची व्याख्याने आयोजित करण्याची आर्य समाज लातूरची जुनी परंपरा राहिली आहे. गत ३० ते ४० वर्षापासून आर्य समाज येथून सामुदायिक दसरा महोत्सवा निमित्त शोभा काढली जाते व तसेच कोजागिरी पौर्णिमेदिवशी दमा रोग्यांना मोफत औषधाचे वाटप केले जाते. त्याचा जवळपास पाच हजार रुग्ण लाभ घेतात. निजाम सरकारच्या जुलमी शासनाविरुद्ध जनजागरण करण्यासाठी ता.२ व ३ जून १९३८ साली महाराष्ट्र परिषदेचे लातूर येथे आयोजन केले होते. या परिषदेचे स्वागताध्यक्ष पद त्यावेळचे आर्य समाज लातूरचे मंत्री श्री दिगंबररावजी शिवणगीकर यांनी भूषविले होते. अशा प्रकारची चळवळ करण्याकरिता त्यावेळच्या हैद्राबाद राज्यात सात आर्य महासम्मेलने आयोजित केली गेली. त्यांपैकी पहिले व सावे सम्मेलन लातूर जिल्ह्यात संपन्न झाले होते. पहिले सम्मेलन १९४२ साली उदगीर येथे व सातवे सम्मेलन सन १९४९ साली लातूर येथे संपन्न झाले होते. या संमेलनात लाहोर येथील हिंदी मिलाप या वृत्तपत्राचे संपादक स्वामी आनंदस्वामीजी तसेच स्वामी रामानंद तीर्थ यांचा सहभाग होता.

आर्य समाज स्थापना शताब्दीनिमित्त सन १९७५ साली आर्य समाज लातूर येथे मराठवाडा विभागीय आर्य संमेलनाचे आयोजन केले होते. या सम्मेलनात डॉ.स्वामी सत्यप्रकाशजी, पं.नरेंद्रजी, पं.शिवकुमारजी शास्त्री, पं.ओमप्रकाशजी त्यागी व श्री अटलबिहारी वाजपेयी इत्यादी नेत्यांची उपस्थित उल्लेखनीय होती. या संमेलनाचे संयोजक श्री चंद्रशेखरजी बाजपाई, उपसंयोजक श्री हरिश्चंद्रजी पाटील व श्री रानबा मंदाडे, कोषाध्यक्ष ओमप्रकाश पाराशर होते. सामाजिक विषमता नष्ट करण्यासाठी आर्य समाजाद्वारे शुद्धी आंदोलन, आंतरजातीय विवाह व सामूहिक भोजन इत्यादी कार्यक्रमाचे आयोजन केले होते. आर्य समाजाच्या विविध कार्यक्रमात दलित-दलितेतर उच्च-नीच भेदभाव पाळला जात नाही. लातूर जिल्ह्यातील सर्व आर्य समाजांसाठी व तसेच मराठवाड्यातील व महाराष्ट्रातील इतर आर्य समाजाच्या प्रगतीसाठी भूतकाळाप्रमाणेच भविष्यकाळात देखील आर्य समाज लातूर मार्गदर्शकांची भूमिका निभावेल.

आर्य समाजाच्या स्थापनेपासून आजपर्यंत जे-जे कार्यक्रम आर्य समाज लातूरने आयोजित केले, त्यांचे श्रेय सर्वश्री डॉ.डी.आर.दासजी (उत्तम मुनी), दिगंबरराव शिवणगीकर, माणिकराव सोनवणे, नामदेवराव चामले, चंद्रनाथ बादाडे, मंगलदवे आर्य, किसनराव हलवाई, वैजनाथराव व्यवहारे, एकनाथराव गोजमगुंडे, केशवराव होळीकर, त्रिंबकराव माळवदकर, गोविंदराव हिरास, चंद्रशेखर बाजपाई, आसारामजी परांडेकर, भैरुलाल पाराशर, नरसिंगराव शिंदे, एकनाथराव गायकवाड, रानबा मंदाडे, बिरदीचंद कुचेरिया, ॲड.हरिश्चंद्र पाटील, हरिश्चंद्र धर्माधिकारी, रामकृष्ण व्यास, निवृत्तीराव होळीकर, डॉ.चंद्रभानू सोनवणे, रघुनाथराव वेदपाठक इत्यादी ज्ञात-अज्ञात व्यक्तींना दिले जाते.

---

**शोकवार्ता**

# सौ.विमलबाई महिंद्रकर यांचे निधन

लातूर येथील महिला आर्य कार्यकर्त्या सौ.विमलबाई गोरक्षनाथ महिंद्रकर यांचे ६ फेब्रुवारी २०१७ रोजी रात्री ११ वा. च्या सुमारास हृदयविकाराने आकस्मिक निधन झाले. मृत्युसमयी त्या ७२ वर्षे वयाच्या होत्या.

त्यांच्या मागे पति, ३ मुले, सुना व नातवंडे असा परिवार आहे. माता विमलबाई अतिशय प्रेमळ, मनमिळाऊ, प्रसन्नवदनी व सर्वांशी स्नेहपूर्ण नाते जोडणाऱ्या सेवाभावी गृहिणी होत्या. आर्य समाजाच्या सत्संग, वार्षिकोत्सव अथवा सभा-संमेलनात त्या स्वेच्छेने उत्साहाने सहभागी होत असत. विशेष करुन यज्ञाविषयी त्यांना फार आवड होती. यज्ञात त्या यजमान म्हणून आवर्जुन सहभागी होत. ईश्वरभक्तीचे भजन गात सर्वांमध्ये चैतन्याचे वातावरण निर्माण करण्यात त्या अग्रणी होत्या. हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील प्रसिद्ध क्रांतिकारी आर्य स्वातंत्र्यसेनानी स्वामी स्वात्मानंदजी (रामचंद्रजी मंत्री) यांच्या त्या पुतणी होत.

स्व.विमलबाईंच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी शहरातील नांदेड रोडवरील राजस्थानी स्मशानभूमीत पूर्ण वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. पं.ज्ञानकुमार आर्य व प्रा.श्री चंद्रेश्वर शास्त्री यांनी हा अंत्यविधी पार पाडला.

# मारुतीराव पाटील यांना पत्नीशोक

पानचिंचोली ता.निलंगा जि.लातूर येथील आर्य समाजाचे सक्रिय कार्यकर्ते व शैक्षणिक, सामाजिक कार्यात मोलाची भूमिका बजावणारे प्रतिष्ठित नागरिक श्री मारुतीराव पाटील यांच्या सुविद्य पत्नी सौ.रत्नाबाई पाटील यांचे वयाच्या ८०व्या वर्षी दि.१९जानेवारी रोजी वृद्धापकाळाने निधन झाले. त्यांच्या मागे कृषिव्यवसाय व राजकीय क्षेत्रात कार्यरत दोन सुपुत्र श्री बालाजी व श्री भाऊसाहेब, सुना, नातवंडे असा परिवार आहे.

दिवंगत सौ.रत्नाबाई अत्यंत मनमिळाऊ, धार्मिक, परोपकारी व भक्तिमार्गावर राहुन व्रतस्थ जीवन जगणाऱ्या आदर्श गृहिणी होत्या. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी सकाळी अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

टिप : शिवणखेडचे आर्य कार्यकर्ते श्री केरबाजी साळुंके, बोरुळचे आर्यसमाजी स्वा.सै.लक्ष्मणराव देवणे, कंधारचे कार्यकर्ते भगवानराव भोसीकर यांचेही या महिन्यात निधन झाले आहे. जागेअभावी त्यांच्या वार्ता पुढील अंकात प्रकाशित होतील.

**सर्व दिवंगतांना महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली × आर्यजन शोकाकुल परिवारांच्या दु:खात सहभागी आहेत.**

**वार्ताविशेष**

# मांसाहार - भाषणस्पर्धेत कु.आकांक्षा प्रथम

**÷मांसाहार व त्यांचे दुष्परिणाम'** या विषयावर सोलापुर येथील आर्य समाजातर्फे नुकतीच भाषण स्पर्धा घेण्यात आली. आर्य कार्यकते श्री मल्लीनाथ बिराजदार यांच्या गौरवार्थ पार पडलेल्या या माध्यमिक विद्यालयीन पातळीवर स्पर्धेत जवळपास १५ स्पर्धकांनी आपल्या भाषणातून **÷मांसाहार अयोग्य कसा ? व त्याचे वाढते भयंकर दुष्परिणाम'**यावर प्रकाश टाकला.

या स्पर्धेत दमाणी प्रशालेची कु.आकांक्षा किशोर पाटील हिने प्रथम (रु.५००/-), एस.व्ही.सी.एस. विद्यालयाचा चि.अनिकेत कोरडे याने द्वितीय (रु.३००/-) व याच शाळेचा चि.शिवकुमार धमडे याने तृतीय (रु.२००/-) पारितोषिके पटकावली. स्पर्धेचे परीक्षण सौ.एस.जी.केवटे व सौ.पी.सी.ढाले यांनी केले. स्पर्धा यशस्वी करण्यासाठी सर्वश्री भाऊसाहेब सुतार, शरद दोशट्टी, केदार पुजारी, देविदास उकीरडे, सौ.सुजाता शास्त्री, सौ.सुचित्रा गरड, शरद होमकर, पं.राजवीर शास्त्री यांनी प्रयत्न केले.

# परळीच्या बहुकुंडलीय विशाल यज्ञात १३६ जोडपे सहभागी

## यज्ञसंस्कृतीचा अवलंब करा-आचार्य पं.आनंद पुरुषार्थी

पर्यावरण रक्षण, मानवीय मूल्यांचे संवर्धन आणि जीवन सुखी व समृद्ध करण्यासाठी प्रत्येकाने यज्ञीय संस्कृतीचा अवलंब करावा, असे आवाहन आंतरराष्ट्रीय ख्यातीचे वैदिक विद्वान आचार्य पं.आनंद पुरुषार्थी यांनी केले.

परळी येथील आर्य समाजात महर्षी दयानंद जयंती व ऋषि बोधोत्सवाचे औचित्य साधून दि.२२ ते २६ फेब्रुवारी २०१७ दरम्यान वेदज्ञान कथा यज्ञाचे आयोजन करण्यात आले होते. त्याची सांगता दि.२६ रोजी उत्साहात झाली. यानिमित्त्य परळीच्या इतिहासात प्रथमच विशुद्ध वैज्ञानिक पद्धतीने बहुकुंडीय यज्ञाचे आयोजन झाले. जवळपास ३४ हवनकुंडांची व्यवस्था होऊन त्यात प्रत्येकी ४ प्रमाणे एकूण १३६ यजमान दांपत्य मिळून २७२ जणांनी मोठ्या श्रद्धेने वैदिक मंत्रांच्या उद्‌घोषात आहुत्या प्रदान केल्या. या यज्ञाचे ब्रह्मापद आंतरराष्ट्रीय विद्वान श्री आनंद पुरुषार्थी यांनी भूषविले तर मंत्रपाठ वेदपाठी ऋत्वीज पं.प्रशांतकुमार शास्त्री, नयनकुमार आचार्य, वीरेंद्र शास्त्री,अरुण चव्हाण यांनी केले. प्रमुख यजमान म्हणून सौ.सरोजदेवी व श्री जयकिशोर दोडिया, सौ.सावित्रीबाई व श्री उग्रसेन राठोर, सौ.शिल्पा व श्री शैलेश दोडिया, सौ.रुक्मिणी देवी व श्री हरिप्रसाद दोडिया हे उपस्थित होते. वैज्ञानिक दृष्टिकोन अंगिकारुन परळीच्या इतिहासात पहिल्यांदाच अशा यज्ञाचे आयोजन झाले. यात व्यापारी, उद्योजक, शिक्षक, प्राध्यापक, अधिकारी, वकील, डॉक्टर आदी सहभागी झाले होते. अंधश्रद्धा व थोतांडांना थारा न देता डोळस विवेकाने व तर्कनिष्ठेने या यज्ञाची प्रक्रिया संपन्न झाली. आचार्य पं.पुरुषार्थी यांनी यज्ञाचे महत्त्व, कार्यपद्धती आणि त्यांचे स्वरुप अतिशय सोप्या पद्धतीने विशद करुन प्रत्येकाने यशाशक्ती प्रतिदिनी यज्ञ करुन जीवनास सुखी, आनंदी, यशस्वी व सफल करण्याचे आवाहन केले.

दरम्यान चार दिवस चाललेल्या वेदज्ञानकथायज्ञ कार्यक्रमात आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थ यांनी आपल्या रसाळ वाणीतून वैदिक तत्त्वज्ञानाचे विवचेन केले. ईश्वराचे सत्यस्वरुप, आत्मकल्याण, कौटुंबिक विकास, समाज व राष्ट्राची उन्नती, आश्रम व्यवस्था, १६ संस्कार, आध्यात्मिक जडणघडण, मानवी जीवनाचे ध्येय आदी विविध विषयांवर त्यांनी मार्मिक मार्गदर्शन केले. यावेळी पं.अजय आर्य यांनी विविध भजने सादर करुन मौलिक उपदेश केला. सभाप्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजींनी ही मार्गदर्शन

केले. संयोजक श्री जयकिशोर व सौ.सरोजदेवी दोडिया यांचा या प्रसंगी सत्कार करण्यात आला. कार्यक्रमास प्रधान जुगलकिशोर लोहिया, मंत्री उग्रसेन राठौर व पदाधिकारी उपस्थित होते. कार्यक्रमास यशस्वी करण्यासाठी सर्वश्री रंगनाथ तिवार प्रभुलाल गोहिल, जयपाल लाहोटी, लक्ष्मण आर्य आदींनी प्रयत्न केले.

# परळीत राज्यस्तरीय संस्कृत कार्यशाळा उत्साहात

तर्कनिष्ठ, व्यावहारिक व वैज्ञानिक दृष्टीकोन बाळगत संस्कृत साहित्यावर केले जाणारे मूल्याधिष्ठित संशोधन समाज व राष्ट्राच्या निर्मितीसाठी अतिशय पूरक ठरते असे प्रतिपादन डॉ.बा.आं.म.विद्यापीठाच्या संस्कृत विभागप्रमुख डॉ.क्रांती व्यवहारे यांनी केले.परळी येथील वैद्यनाथ महाविद्यालयाच्या संस्कृत विभागातर्फे दि.२८ जानेवारी २०१७ रोजी संस्कृत संशोधन या विषयावर राज्यपातळीवर कार्यशाळा घेण्यात आली. त्यावेळी त्या प्रमुख मार्गदर्शक म्हणून बोलत होत्या. अध्यक्षस्थानी जवाहर शिक्षण संस्थेचे सचिव श्री दत्ताप्पा इटके होते. या चर्चासत्रात नांदेडचे संस्कृततज्ज्ञ प्रा.सत्यकामजी पाठक, मुखेडचे संस्कृत अभ्यासक डॉ.गणंजय गहाळेकर यांनी वेगवेगळ्या सत्रात आपले विचार मांडले. याप्रसंगी संस्थेचे सहसचिव डॉ.सुरेश चौधरी, लक्ष्मणराव आर्य, प्राचार्य डॉ.आर.के.इप्पर आदी मान्यवर उपस्थित होते. या चर्चासत्राला मराठवाड्यातून जवळपास १०६ संस्कृत शिक्षक, प्राध्यापक, संशोधक विद्यार्थी उपस्थित होते. यावेळी झालेल्या चर्चेत सर्वश्री प्रा.सोमदेव शिंदे, प्रा.अखिलेश शर्मा, डॉ.दिगंबर मुडेगांवकर, प्रा.चंद्रेश्वर शास्त्री, प्रा.सुरेखा भारती, प्रा.डॉ.नरेंद्र शिंदे, तानाजी शास्त्री, डॉ.श्रीमती नेरकर यांनी सहभाग घेतला. कार्यक्रमाच्या संचलन संयोजक डॉ.नयनकुमार आचार्य व प्रा.उत्तम नरवाडकर यांनी केले.

## आर्य समाजांनी ऐतिहासिक माहिती पाठवावी

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेने वेबसाईट बनविण्याचे कार्य हाती घेतले आहे. तरी सभांतर्गत सर्व आर्य समाजांना कळविण्यात येते की, आपण आपल्या आर्य समाजांचा इतिहास, पूर्वीपासून ते आजपर्यंतचे पदाधिकारी, विशेष उपक्रम, आजपर्यंत झालेले कार्यक्रम, परिसरातील आर्य स्वातंत्र्य सैनिकांची यादी, पुरोहित, विद्वान्, त्यागी व तपस्वी व्यक्तिमत्त्व, वानप्रस्थी(मुनिगण) व विशेष आर्य कार्यकर्त्यांची नावे इत्यादी माहिती लवकरात लवकर महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या ÷आर्य समाज परळी-वैजनाथ जि.बीड' या संपर्क पत्त्यावर पाठवावी. —सभामंत्री

# -० परली का बहुकुण्डीय विशाल यज्ञ ०-

आर्य समाज परली एवं दोडिया परिवार द्वारा आयोजित बहुकुण्डीय यज्ञ में यजमानों को मार्गदर्शन करते हुए वैदिक विद्वान् श्री आनंदजी पुरुषार्थी ।

यज्ञ में सश्रद्ध आहुतियाँ प्रदान करते हुए यजमान दम्पती एवं परिवार।

यज्ञ वेदी पर मुख्य यजमान श्री हरिप्रसादजी, श्री जयकिशोरजी दोडिया तथा उनका परिवार ।